RNI No. RAJHIN/2013/50503

देव चेतना

हिन्दी मासिक

वर्ष : 13 | अंक : 9 | जयपुर | प्रकाशन तिथि : 5 नवम्बर, 2025 | मूल्य : 20/- | पृष्ठ-40

देव चेतना पत्रिका के प्रेरणा स्रोत एवं प्रधान संरक्षकगण

स्व.श्री रामगोपाल गार्ड प्रेरणा स्रोत | श्री कालूलाल गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्री भौंरीलाल बागड़ी प्रधान संरक्षक | श्री सरदारसिंह चेची प्रधान संरक्षक | श्री अशोक गार्ड प्रधान संरक्षक | श्री पुरुषोत्तम फागणा प्रधान संरक्षक | श्री रतनलाल चेची प्रधान संरक्षक | श्री पृथ्वीसिंह चौहान प्रधान संरक्षक | रामलाल गुंजल प्रधान संरक्षक | श्री घनश्याम तंवर प्रधान संरक्षक

डॉ. दक्षा जोशी प्रधान संरक्षक | डॉ. कुलदीप महुआ प्रधान संरक्षक | श्री अमरसिंह धाभाई प्रधान संरक्षक | श्री शैतान सिंह गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्री गोपाल सिंह गुर्जर प्रधान संरक्षक | तिलकराज बैंसला प्रधान संरक्षक | कर्नल चौ. देवेन्द्र सिंह प्रधान संरक्षक | श्री रामजीलाल गुर्जर पटवारी प्रधान संरक्षक | श्री इन्द्रराज विधूड़ी प्रधान संरक्षक | श्री नानजीभाई गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्री कन्हैयालाल साधना प्रधान संरक्षक

भारत रत्न पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल जयन्ती को राजस्थान गुर्जर महासभा द्वारा राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में प्रदेशभर में मनाया गया।

इस अवसर पर समाज की समस्याओं के समाधान के लिये तीन सूत्री ज्ञापन मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नाम जिला कलेक्टर को दिया गया।

DR. DHABHAI'S SKIN CLINIC

SKIN | LASER | AESTHETICS

Ist Floor, Above ICICI Bank, Girdhar Marg, Malviya Nagar, Jaipur-302017

M. : 9772760561, 9462336561

Specialities

- **Laser Hair Removal** (Lumenis diode Laser)
- **Acne Scan Treatment** (Acupulse)
- **Laser Skin Tonning**
- **Freckles Treatment**
- **Tattoo Removal** (Alma/Q)
- **Rosacea & Acne** (Stellar M22 Lumenis)
- **PRP**
- **Vampire Facial**
- **Chemical Peeling**
- **Botox**
- **Fillers**
- **Thread Lift**
- **Vitiligo Surgery**
- **Mole Removal**
- **Hair Transplant**
- **Sex Counselling**

TIMING :
05pm to 08pm
Sunday & Monday (off)

Time only by Appointment

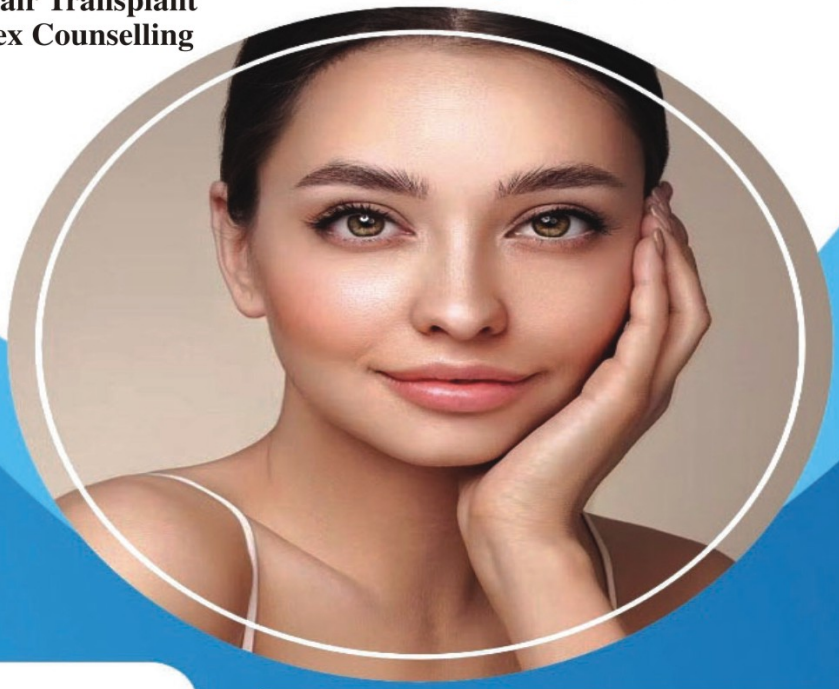

Dr. Ravindar Dhabhai

M.D. (Skin & V.D.)

Skin & V.D. Specialist

MRS. SARITA GUJAR
PRANT PRABHARI
MAHILA PATANJALI YOG SAMITI
Timing : 10 AM to 8 PM (Monday off)
Only by Appointment

स्व. नाथूराम गुर्जर (बड़े सरदार) परिवार की ओर से
सरदार पटेल जयन्ती राष्ट्रीय एकता दिवस एवं
कार्तिक पूर्णिमा देव दीवाली पर्व पर गुर्जर समाज एवं
सभी देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

श्री सवाईभोज रिसोर्ट, करेड़ा

जिला-भीलवाड़ा (राजस्थान)

ठहरने की उत्तम व्यवस्था

स्वच्छ एवं पारिवारिक परिवेश पूर्ण वातावरण

भारत रत्न लौहपुरुष सरदार पटेल जयन्ती राष्ट्रीय एकता दिवस एवं
कार्तिक पूर्णिमा देव दीवाली पर्व पर देव चेतना पत्रिका के पाठकों एवं
सभी देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

पुष्कर आगमन पर
रामधाम ट्रस्ट के
ट्रस्टी दिनेश भाई रूपारेलिया
एवं
देव चेतना पत्रिका
सह-सम्पादक डॉ. दक्षा जोशी
एवं उनकी सुपुत्री रूचि के
स्वागत-अभिनन्दन के छायाचित्र

डॉ. दक्षा जोशी 'निर्झरा'

लेखिका एवं साहित्यकार (अहमदाबाद-गुजरात)
संरक्षक- गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान
सह-सम्पादक देव चेतना मासिक पत्रिका

RNI No. RAJHIN/2013/50503

देव चेतना

हिन्दी मासिक

सामाजिक, राजनैतिक समाचार, आध्यात्मिक ज्ञान, धर्म, दर्शन, इतिहास, साहित्य-कला एवं संस्कृति की अमृतमयी पत्रिका

वर्ष : 13 अंक: 9 जयपुर प्रकाशन तिथि: 5 नवम्बर, 2025 मासिक

प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यतीन्द्र कुमार वर्मा
सम्पादक- वीरगुर्जर, लोनी, मेरठ (उ.प्र.)
स्व. श्री रामगोपाल गार्ड
प्रदेशाध्यक्ष-राज.गुर्जर महा.,जयपुर

प्रकाशन / प्रधान संरक्षक :
कालूलाल गुर्जर
पूर्व मंत्री, सरकारी मुख्य सचेतक, राज.सरकार

प्रकाशक/सम्पादक :
मोहनलाल वर्मा- मो. 9782655549

प्रकाशन व्यवस्थापक :
सरदार सिंह चेची- मो. 9829063710

प्रबन्ध सम्पादक :
वी.बी. जैन- मो. 9261640571

सह-सम्पादक :
डॉ. दक्षा जोशी-अहमदाबाद (गुजरात)
भावना गुर्जर- मो. 8890499200
अमरसिंह कसाना- मो. 9460875478
छीतरलाल कसाना- मो. 9929560765
शैतान सिंह गुर्जर- मो. 9414315639
देवनारायण रग्गल- मो. 9414321012

विधि सलाहकार :
प्रहलाद सिंह अवाना- मो. 9414752520
हजारीलाल सराधना- मो. 9414752519

सीकर संवाददाता : भंवर सिंह धाभाई
समस्त पद अवैतनिक हैं।

सम्पादकीय कार्यालय: 3714, कालों का मौहल्ला, के.जी.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302003
E-mail:devchetnanews@gmail.com

देव चेतना मासिक पत्रिका सहयोग राशि

प्रधान संरक्षक	11,000/-
मुख्य संरक्षक	5,100/-
पंचवर्षीय	1100/-

1 बैंक खाता : मोहनलाल वर्मा
SBI, जौहरी बाजार, जयपुर
A/c No. 61163439684
IFSC: SBIN0031029

2 Bank A/c : DEV CHETNA
THE RAJASTHAN URBAN CO-OPERATIVE BANK LTD.
A/c No. 96000409474
IFS Code : UTIB0SRUCB1

:: अनुक्रम ::

1. सम्पादकीय... अखण्ड भारत की एकात्मकता के...	6
2. मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा	7-8
3. प्रदेशभर में महासभा जिलाध्यक्षों ने मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा	9-11
4. राज. गुर्जर महासभा उदयपुर संभाग अधिवेशन सम्पन्न	12-14
5. पूर्व मंत्री हरीश भाटी के पुत्र आशीष का महाप्रयाण	15
6. आओ मिल-बैठकर चुनौतियों का सामना करें	16-18
7. युवाओं के लिए पत्रकारिता के क्षेत्र में कैरियर गाइडेंस	18-19
8. श्री रामधाम ट्रस्ट पुष्कर में अन्नकूट महोत्सव सम्पन्न	20-21
9. गुर्जर छात्रावास सीकर में दीपावली स्नेह मिलन	22-24
10. गुजरात के पूर्व मंत्री झड़फिया की पहल रंग लायेगी	25
11. राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयनित गुर्जर गौरव	26-27
12. अनुत्तरित प्रश्न : गुर्जरों के साथ न्याय क्यों नहीं ?	30
13. प्रो. अंबादान के चिंतन में चारणत्व की चारु चमक	32-34
14. साहस, स्वाभिमानी लौहपुरुष सरदार पटेल -अरोरा	35-36

सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर शहर न्यायालय होगा।
पत्रिका में प्रकाशित पठनीय लेख/सामग्री के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है।
पत्रिका प्रकाशन का इस सम्बन्ध में कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

सम्पादकीय...

अखंड भारत की एकात्मता के शिल्पी लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल

गुर्जर मोहन लाल वर्मा

भारतीय जनमानस आज स्वतंत्र भारत के नव निर्माण के कुशल शिल्पी, लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल को नमन कर रहा है। 31 अक्तूबर को मनाया जाने वाला राष्ट्रीय एकता दिवस केवल एक स्मरण दिवस नहीं, बल्कि भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक पुनरुत्थान का संकल्प दिवस है। सरदार पटेल का चिंतन हमें बताता है कि 'राष्ट्र की सच्ची एकता केवल सीमाओं के विलय में नहीं, बल्कि संस्कृतियों, विचारों और मानवीय संबंधों के एकत्व में निहित है। उनका जीवन इस बात का साक्ष्य है कि संगठन, अनुशासन और नैतिकता ही भारत को अखंड और अजेय बना सकते हैं।'

एकता का प्रतीक और दृढ़ संकल्प का परिचायक

गुजरात के सरदार सरोवर बांध के पास स्थित 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' केवल एक प्रतिमा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय समरसता और समर्पण का प्रतीक है। यह हमें स्मरण कराती है कि मतभेदों से ऊपर उठकर ही राष्ट्र निर्माण संभव है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सरदार पटेल की यह स्मृति स्थापित कर भारतीय जनमानस को पुन: उनके आदर्शों से जोड़ने का प्रयास किया गया है।

वर्तमान भारत के लिए पटेल का मार्गदर्शन

आज का भारत सामाजिक, आर्थिक और सांप्रदायिक चुनौतियों के दौर से गुजर रहा है। राजनीति का अपराधीकरण, बढ़ता भ्रष्टाचार, धार्मिक कट्टरता और सामाजिक असमानता- ये सब उस राष्ट्रीय एकता को चुनौती दे रहे हैं जिसे पटेल ने अपने संगठन कौशल और त्याग से निर्मित किया था।

ऐसे समय में सरदार पटेल का विचार हमें प्रेरित करता है कि > 'राष्ट्र निर्माण का आधार धर्म या वर्ग नहीं, बल्कि ईमानदार कर्म और राष्ट्रीय चरित्र होना चाहिए।'

आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना के लिए हमें उन्हीं के दिखाए मार्ग पर चलकर सनातन नैतिक मूल्यों को पुनर्जीवित करना होगा।

संगठन, सेवा और समर्पण का पाठ

खेड़ा सत्याग्रह, नागपुर झंडा आंदोलन और बारडोली सत्याग्रह- ये केवल आंदोलनों के नाम नहीं, बल्कि जनशक्ति के संगठन के उदाहरण हैं। अहमदाबाद नगरपालिका में अंग्रेज अधिकारियों से टकराते हुए पटेल ने जो प्रशासनिक कौशल दिखाया, वह आज के नेताओं के लिए अनुकरणीय है।

500 से अधिक रियासतों का विलय कर उन्होंने राजनीतिक दृष्टि से खंडित भारत को एकीकृत कर एक सशक्त राष्ट्र-राज्य का स्वरूप दिया।

भुला दी गई विभूति, पर अमर आदर्श

स्वतंत्र भारत के आरंभिक दशकों में उन्हें राजनीतिक रूप से उपेक्षित रखा गया- यह एक ऐतिहासिक दुर्भाग्य था। सन 1991 में जब उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया, तब जाकर राष्ट्र ने अपने वास्तविक शिल्पी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

यह प्रश्न आज भी प्रासंगिक है कि > 'जिस व्यक्ति ने भारत को एक सूत्र में बाँध दिया, उसे इतने वर्षों तक क्यों भुलाया गया?'

साहित्य, कला और युवा की भूमिका

राष्ट्र निर्माण केवल राजनीति का कार्य नहीं।

साहित्य, कला, शिक्षा और मीडिया को भी ऐसी दृष्टि अपनानी होगी जो विभाजन नहीं, एकता और सह-अस्तित्व को बढ़ावा दे।

महिला सशक्तिकरण, वरिष्ठ नागरिकों के अनुभवों का सदुपयोग और जागृत युवा शक्ति- ये तीनों मिलकर आत्मनिर्भर भारत का आधार बन सकते हैं।

समरस भारत का सपना :

पटेल का विचार था कि हर नागरिक अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए राष्ट्र की प्रगति में भागीदार बने।

उन्होंने अस्पृश्यता, जातिवाद और सामाजिक असमानता को मिटाने के लिए डॉ. भीमराव अंबेडकर के साथ मिलकर संविधान निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाई।

उनकी यह दृष्टि बताती है कि-> 'भारत केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि जीवन-मूल्यों और संस्कृतियों का अखंड परिवार है।'

आज का संकल्प : राष्ट्रीय एकता दिवस के इस पावन अवसर पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि-

हम सरदार पटेल के सपनों के भारत को साकार करने हेतु मन, वचन और कर्म से कार्य करेंगे।

हम सामाजिक विषमताओं, सांप्रदायिकता और भ्रष्टाचार से मुक्त एक न्यायसंगत, आत्मनिर्भर और सांस्कृतिक भारत का निर्माण करेंगे।

> जय जय भारत माता। > जय जय अखंड भारत।

> मातृभूमि तेरा वैभव अमर रहे।

देव चेतना - संपादकीय दृष्टि

> 'लौह पुरुष पटेल के विचार हमें यह सिखाते हैं कि भारत की अखंडता केवल सीमाओं में नहीं, बल्कि विचारों की उदारता और कर्म की ईमानदारी में निहित है।'

> आज का भारत यदि फिर से उनके आदर्शों को आत्मसात कर ले, तो यह भूमंडलीकरण के युग में आत्मनिर्भर, समरस और शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में पुन: प्रतिष्ठित हो सकता है।

राजस्थान प्रदेश में राजस्थान गुर्जर महासभा द्वारा 25 जिलों में लौह पुरुष भारत रत्न सरदार पटेल की 150 वीं जयंती राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाई गई

जिलाध्यक्षों के नेतृत्व में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नाम जिला कलेक्टर को तीन सूत्री ज्ञापन सौंपा

जयपुर 31 अक्टूबर। राजस्थान गुर्जर महासभा जयपुर शहर जिला एवं युवा प्रकोष्ठ के तत्वाधान में भारत रत्न लोह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150 वी जयंती के अवसर

पर जयपुर कलेक्ट्रेट सर्किल स्थित गार्डन में भारत के तत्कालीन गृहमंत्री एवं उप प्रधानमंत्री सरदार पटेल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी की अध्यक्षता राजस्थान गुर्जर महासभा युवा प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष गौरव चपराना द्वारा की गई। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष प्रहलाद सिंह अवाना ने कहा कि सरदार पटेल के अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए हमें अखंड भारत निर्माण के लिए भारत में आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना के लिए कार्य करना होगा।

सरदार पटेल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपने विचार रखते हुए प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मोहनलाल वर्मा ने कहा कि जिस प्रकार से सरदार पटेल ने भारतवर्ष की देशी रियासतों को एक राष्ट्र का स्वरूप प्रदान किया उसी प्रकार आज हमें सनातन धर्म के विभिन्न घटकों को एक साथ लेकर सामाजिक समरसता के लिए कार्य करने की आवश्यकता है। भारतीय समाज में सामाजिक समरसता एवं अखंड भारत के सांस्कृतिक वैभव को पुनर्स्थापित करने के लिए राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर हमें एकजुट होकर कार्य करने का संकल्प लेना होगा। उन्होंने बताया कि आज महासभा द्वारा प्रदेश के सभी जिलों में एमबीसी वर्ग की लंबित मांगों पर राजस्थान सरकार से समाधान चाहने बाबत ज्ञापन प्रस्तुत किया जाएगा।

एमबीसी वर्ग को संविधान की नवी अनुसूची में सम्मिलित करवाने, आरक्षण आंदोलन के दौरान दर्ज मुकदमों को राजस्थान सरकार द्वारा वापस लेने, सभी भर्तियों में बैकलॉग पूरा करने, भर्तियों में उत्पन्न विसंगतियों का समाधान करने हेतु राजस्थान गुर्जर महासभा एवं अन्य संगठनों से वार्ता करके राज्य सरकार आरक्षण व्यवस्था के संबंध में उत्पन्न भ्रांतियों का निवारण करें जिससे समाज द्वारा बार-बार आंदोलन करने की नौबत ना आए।

चोपड़ा कमेटी रिपोर्ट के क्रियान्वयन में गठित देवनारायण बोर्ड को पूर्ण स्वायत्तता प्रदान की जावे तथा वित्तीय शक्तियां प्रदान करके एमबीसी वर्ग के लिए सामाजिक, शैक्षणिक,

आर्थिक लाभ दिए जाने के लिए सक्षम बनाकर , सरकार द्वारा आवंटित बजट में भी वृद्धि की जाए।

गुर्जर आदि तीर्थ नाग पहाड़ को श्री देवनारायण अतिशय क्षेत्र घोषित करके वहां सवाईभोज, साडू माता, भगवान श्री

देवनारायण एवं बाबा रूपनाथ के स्मारक बनाए जाएं।

श्रद्धालुओं के अपने आस्था स्थल पर पहुंचने के लिए सड़क मार्ग बनाये जाने का राज्य सरकार द्वारा तत्काल निर्णय लिया जाए। संगोष्ठी के प्रारंभ में राजस्थान गुर्जर महासभा महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश अध्यक्ष सुनीता गुर्जर ने सरदार पटेल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर कविता पाठ करके खूब तालियां बटोरी।

संगोष्ठी को युवा प्रकोष्ठ जयपुर शहर जिला अध्यक्ष मुकेश गुर्जर, महासभा के जयपुर शहर जिला अध्यक्ष सरदार सिंह चेची, राजस्थान प्रदेश गुर्जर महासभा अभिभाषक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष शंकरलाल गुर्जर ने भी संबोधित किया।

संगोष्ठी के पश्चात कलेक्टर सर्कल से रवाना होकर जिलाधीश कार्यालय स्थित सरदार वल्लभ भाई पटेल की मूर्ति पर माल्यार्पण एवं पुष्प वर्षा करके कार्यकर्ताओं द्वारा अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। महासभा के जयपुर शहर जिलाध्यक्ष सरदार सिंह चेची की अगुवाई में प्रतिनिधिमंडल द्वारा अतिरिक्त जिला कलेक्टर जयपुर विनीता सिंह को राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नाम तीन सूत्री ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। जिला कलेक्टर ने प्रतिनिधिमंडल को बताया कि वह अपनी टिप्पणी सहित ज्ञापन मुख्यमंत्री कार्यालय में शीघ्र भिजवा देंगी।

हमें प्रकृति-पर्यावरण चेतना के प्रति जागृत होना होगा

वह दमदार तरीके से कहते हैं कि कुदरत हमें हर अच्छे-बुरे के बारे में साफ-साफ बताती है, लेकिन हम अपनी कमजोर संवेदना की वजह से उस ओर ध्यान नहीं देते। मनमानी करने की आदत हमारी इस तरह पड़ चुकी होती है कि हम अपने आस-पास की चीजों से बेखबर रहते हैं। जब तक कुछ खास न घट जाए, हम उस पर गौर नहीं करते। जिस रास्ते से रोज गुजरते हैं, उस रास्ते में ऐसा खास क्या है, जो हमें देखना-समझना चाहिए, इस बात से भी हम आमतौर पर अनजान बने रहते हैं। जिंदगी की एकरसता हमारी आदत का हिस्सा बनी रहती है।

प्रकृति के चितेरे कवि सुमित्रानंदन पंत ने अपनी कविताओं में भी बताया- जिस रेत के महीन कण को हम महज नदी के साथ बह आए पत्थर के कण समझते हैं, उन कणों में उन्होंने प्रकृति के गहरे निनाद को शब्द में पिरोया और उसे प्रकृति का सहचर कहकर संबोधित किया। हम कवि-साहित्यकार हों या नहीं हों, लेकिन हमारे अंदर कुदरत ने वह क्षमता जरूर दी है, जिससे हम चीजों की प्रकृति को गहराई से समझ सकें। लेकिन हम सांसारिक कार्यों में इतने ज्यादा उलझे रहते हैं कि जीवन और प्रकृति के अटूट रिश्ते को समझने की कोशिश ही नहीं करते।

जिस प्रकृति से हम हवा, पानी, भोजन, रोशनी और असंख्य फायदे रात-दिन लेते रहते हैं, उसके प्रति हमारा क्या रिश्ता होना चाहिए, उस तरफ हमने कभी गौर ही नहीं किया। सबकुछ सहजता से मिलने पर भी हजार तरह की शिकायतें करते रहते हैं।

राजस्थान गुर्जर महासभा के जिला अध्यक्षों ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नाम जिला कलेक्टरों को तीन सूत्री ज्ञापन सौंपा

राजस्थान गुर्जर महासभा द्वारा 31 अक्टूबर भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर सरदार पटेल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संगोष्टि का आयोजन हुआ।

जिला करौली में महासभा जिला अध्यक्ष हरगुणसिंह गुर्जर के नेतृत्व में जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया है।

सवाई माधोपुर जिला अध्यक्ष रामकेश गुर्जर की अध्यक्षता में संगोष्ठी एवं जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया गया।

राजस्थान गुर्जर महासभा प्रदेश उपाध्यक्ष, भरतपुर संभाग प्रभारी लखन डोयंलां के नेतृत्व में डीग एवं भरतपुर में संगोष्ठी का आयोजन तथा जिला डीग अध्यक्ष परमेंद्र गुर्जर के नेतृत्व में जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया गया। जिला कलेक्टर भरतपुर में ज्ञापन जिला अध्यक्ष शिवराम ठेकेदार मोलोनी के नेतृत्व में दिया गया।

राजस्थान गुर्जर महासभा प्रभारी प्रदेश मंत्री लक्ष्मण गुर्जर तथा अजमेर संभाग अध्यक्ष कानाराम गुर्जर के नेतृत्व में ब्यावर जिला अध्यक्ष बुधराम गुर्जर, टोंक जिला अध्यक्ष उदय लाल गुर्जर, अजमेर जिला अध्यक्ष भंवर लाल चोपड़ा, नागौर जिला

अध्यक्ष महावीर कुचेरा, महामंत्री मदन लाल गुर्जर के सानिध्य में सभी जिलों में राष्ट्रीय एकता दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन एवं जिला कलेक्टरों को तीन सूत्री ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। राजस्थान गुर्जर महासभा प्रदेश महामंत्री छितर लाल कसाना, संभाग प्रभारी प्रदेश उपाध्यक्ष मन्नालाल खटाना के नेतृत्व में डॉ बी एल गोचर कोटा जिला अध्यक्ष, बूंदी जिला अध्यक्ष शिवराज गुर्जर, बारां जिला अध्यक्ष हरि प्रकाश

भड़ाना, झालावाड़ जिला अध्यक्ष सूरत राम गुर्जर, प्रदेश संगठन मंत्री बजरंग लाल गुर्जर, प्रदेश संयोजक देवकरण गुर्जर के

सानिध्य में कोटा संभाग के सभी जिलों में सरदार पटेल जयंती राष्ट्रीय एकता दिवस पर संगोष्ठी एवं सभी जिला कलेक्टरों को तीन सूत्री ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

दूगांर, प्रदेश मंत्री देशराज गुर्जर, राजसमंद जिला अध्यक्ष हजारीलाल गुर्जर, प्रताप गढ़ जिला अध्यक्ष मनोहर लाल गुर्जर,

बांसवाड़ा जिला अध्यक्ष मनीराम बागड़ी एवं महासभा के उदयपुर जिला अध्यक्ष के नेतृत्व में जिला कलेक्टर को तीन सूत्री ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

राजस्थान गुर्जर महासभा भीलवाड़ा जिला अध्यक्ष शंकर

जोधपुर संभाग अध्यक्ष देवकरण गुर्जर के नेतृत्व में जोधपुर संभाग में संगोष्ठी आयोजन पश्चात जिला कलेक्टरों को ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

सीकर संभाग प्रभारी अर्जुन लाल गुर्जर एवं प्रदेश महामंत्री शैतान सिंह गुर्जर के नेतृत्व में जिला सीकर, जिलाध्यक्ष राकेश गुर्जर के नेतृत्व में जिला झुंझुनू, जिला अध्यक्ष भंवर लाल गुर्जर के नेतृत्व में जिला चूरू में राष्ट्रीय एकता दिवस पर संगोष्ठी एवं संभाग के सभी जिलों में जिला कलेक्टर को ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

राजस्थान गुर्जर महासभा उदयपुर संभाग कार्यकारी अध्यक्ष प्रभारी नाथू लाल गुर्जर के नेतृत्व में संभाग में सरदार पटेल जयंती पर संगोष्ठी एवं चित्तौड़ जिला अध्यक्ष मांगीलाल

लाल गुर्जर, संरक्षक सुखलाल गुर्जर, महामंत्री गोपाल गुर्जर, पूर्व सिवाना पंचायत समिति प्रधान श्रीमती सरोज गुर्जर के

सानिध्य में सरदार पटेल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ एवं तत्पश्चात भीलवाड़ा जिला कलेक्टर को महासभा द्वारा जुलूस के रूप में पहुंचकर तीन सूत्री ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

जयपुर संभाग प्रभारी प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष प्रहलाद सिंह अवाना के नेतृत्व में जयपुर शहर जिला अध्यक्ष सरदार सिंह चेची, राजस्थान प्रदेश गुर्जर महासभा युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष गौरव चपराना, राजस्थान गुर्जर महासभा अभिभाषिक प्रकोष्ठ अध्यक्ष शंकर लाल गुर्जर एवं प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मोहनलाल वर्मा के सानिध्य में जयपुर कलेक्ट्रेट स्थित गार्डन में राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन संपन्न हुआ तथा जिला अध्यक्ष के नेतृत्व में जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया गया।

प्रदेश मीडिया प्रभारी लीलाराम गुर्जर के नेतृत्व में जिला कोटपूतली बहरोड तथा खैरथल जिला अध्यक्ष घनश्याम तंवर के नेतृत्व में संगोष्ठी का आयोजन तथा जिला कलेक्टरों को तीन सूत्री ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं को नहीं होगी समस्या : नरेशकुमार गुर्जर

श्री देवनारायण मंदिर ट्रस्ट के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को किया सम्मानित

निवाई। श्री देवनारायण मंदिर ट्रस्ट के नवनिर्वाचित अध्यक्ष नरेश गुर्जर, महामंत्री रतनदीप गुर्जर व कोषाध्यक्ष जगदीश बोकण का आरडी गुर्जर के नेतृत्व में 51 किलो की माला पहनाकर स्वागत किया गया। गुर्जर नेता भूणाराम गुर्जर व दयाशंकर पोसवाल ने बताया कि सम्मान समारोह में ट्रस्ट अध्यक्ष नरेश गुर्जर ने कहा कि मंदिर के विकास से जुड़े सभी निर्णयों में सबकी राय ली जाएगी। उन्होंने मंदिर हित में आवश्यक कदम उठाने और ट्रस्ट को शिक्षा से जोडने आव्हान किया।

उन्होंने आश्वासन दिया कि मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। उन्होंने बताया कि भगवान श्री देवनारायण को 36 कॉर के लोग मानते हैं और सभी समाज के लोग उनकी पूजा अर्चना करते हैं। कार्यक्रम का मंच संचालन मुकेश कुटखा ने किया।

इस अवसर पर शंकरलाल मीणा, भामाशाह सीताराम पोसवाल, संग्रामसिंह मसूदा, पूर्व प्रधान रामचन्द्र गुर्जर, सुरेश डोई, सूदी, मांगीलाल पूर्व प्रधान डोई, ट्रस्ट के पूर्व महामंत्री एडवोकेट सवाईभोज गुर्जर, महेन्द्र कसाणा, मुरलीराम गुर्जर, नादान सिंह गुर्जर, हंसराज फागणा, भेरूलाल गुर्जर, शिवराज लांगडी हरभांवता, रूपसिंह अधाणा, राजेन्द्र चैयरमेन, हरिशंकर खटाणा मण्डालिया, दयाशंकर पोसवाल, मनमोहन फागणा, हजारीलाल, गणेश चेची, हनुमान छावडी, कांजीराम गुर्जर, कैलाश अवाना, शिवराज सरपंच थली, मोहन सरपंच, शंकर छैपट, मुकेश कुटखा, महावीर फौजी, रमेश डीआर, श्योजी हिंगोनिया, राजेश सेदरिया, राजेश चाकसू सहित कई लोग उपस्थित थे।

राजस्थान गुर्जर महासभा उदयपुर संभाग अधिवेशन सम्पन्न

अधिवेशन में सरदार पटेल जयंती को प्रदेशभर में राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाने एवं समाज की ज्वलंत समस्याओं के समाधान के लिए मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टरों को जिला अध्यक्ष के नेतृत्व में ज्ञापन प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया।

राजसमंद 11 अक्टूबर। राजस्थान गुर्जर महासभा उदयपुर संभाग संयोजक नाथू लाल गुर्जर (गंढ़बोंर चारभुजा) द्वारा आहूत संभागीय अधिवेशन अभूतपूर्व रहा, अधिवेशन में बोराड क्षेत्र के चौदह चौखंलो के अध्यक्ष मांगीलाल जी सहित सभी चौंखलों के प्रमुख पदाधिकारी उपस्थित रहे। अधिवेशन राजस्थान गुर्जर महासभा राजसमंद जिला अध्यक्ष हजारीलाल गुर्जर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। अधिवेशन का प्रारंभ अतिथियों द्वारा भगवान श्री देवनारायण के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ शुरू हुआ। जिला अध्यक्ष हजारीलाल गुर्जर ने राजस्थान प्रदेश से आए पदाधिकारी, जिला अध्यक्षों एवं संभाग के सभी जिलों से उपस्थित प्रतिनिधियों एवं आगंतुक अतिथियों के सम्मान में स्वागत भाषण करते हुए कहा मेवाड़ की धरती पर आप सभी समाज के प्रबुद्ध एवं निष्ठावान कार्यकर्ताओं का स्वागत एवं सत्कार है। जिले के पदाधिकारियों द्वारा आगंतुक अतिथियों का माल्यार्पण एवं साफ़ा बंधवा कर स्वागत सत्कार किया गया।

राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष पूर्व मंत्री कालूलाल गुर्जर एवं श्री देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष ओमप्रकाश बढ़ाना के मुख्य आतिथ्य में अधिवेशन समाज की महत्वपूर्ण ज्वलंत समस्याओं पर चर्चा तथा समाधान के उपायों पर केंद्रित रहा।

महासभा के प्रदेश महामंत्री छितर लाल कसाना ने प्रदेश कार्य समिति द्वारा इस वर्ष पूरे प्रदेश में सात संकल्पनाओं को लेकर कार्य करने एवं अधिवेशन की प्रस्तावना पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला।

प्रदेश महामंत्री शैतान सिंह गुर्जर ने गुर्जर जाति के प्राचीन गौरव पूर्ण इतिहास की जानकारी देते हुए राजस्थान गुर्जर महासभा द्वारा सामाजिक उत्थान के लिए किए जा रहे कार्यों के संबंध में जानकारी दी।

प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष प्रहलाद सिंह अवाना ने जिलों में महासभा की कार्यप्रणाली एवं महासभा द्वारा समाज को संगठित करने की दिशा में किए जा रहे हैं प्रयासों की जानकारी देते हुए महासभा की प्रस्तावित कार्य योजना पर विस्तार से प्रकाश डाला।

राजस्थान गुर्जर महासभा प्रदेश मीडिया प्रभारी लीलाराम गुर्जर ने अभी हाल ही में कोटपूतली में आयोजित हुए समाज के सम्मेलन में समाज सुधार के लिए दिए गए 11 सूत्री नियमों की जानकारी देते हुए समाज की दशा व दिशा पर प्रकाश डाला।

प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मोहनलाल वर्मा ने गुर्जर आरक्षण आंदोलन, चोपड़ा कमेटी की रिपोर्ट, एसबीसी आरक्षण के प्रति अपेक्षा पूर्ण रवैये तुलनात्मक दृष्टि से प्रदेश में समाज की

सामाजिक राजनीतिक आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए समाज को एकजुट होने का आवाहन करते हुए उपस्थित प्रतिनिधियों के समक्ष तीन प्रस्ताव प्रस्तुत किए, जिन्हें सर्वसम्मति से पारित किया गया। पारित प्रस्तावों के अनुसार 31 अक्टूबर को सभी जिला अध्यक्षों के नेतृत्व में महासभा

द्वारा सरदार पटेल जयंती राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाने, इस अवसर पर एमबीसी आरक्षण को नवी अनुसूची में सम्मिलित करवाने, भर्तियों में बैकलॉग की पूर्ति करने, विसंगतियों का निवारण एवं अब तक हुए सभी समझौता को पूर्ण रूपेण क्रियान्वयन हेतु त्वरित कार्रवाई करने, देवनारायण बोर्ड को स्वायत्तता प्रदान किये जाने, वित्तीय अधिकार दिए जाने तथा बजट में वृद्धि करने संबंधी मांगो के निवारण के लिए राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नाम जिला कलेक्टरों को महासभा के जिला अध्यक्षों के नेतृत्व में ज्ञापन प्रस्तुत करने का निर्णय किया गया।

अधिवेशन के विशिष्ट अतिथि मेवाड़ में समाज के उत्थान के लिए सतत् संघर्षशील देवकीनंदन काका ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमें समाज को अन्य समाजों के समक्ष प्रतिष्ठित करने के लिए शिक्षा और संस्कारों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। यह कार्य समाज के सभी पक्षों को एक मंच पर इकट्ठा करने पर ही संभव है। हमें समाज को संगठित करने के कार्य में गति लानी चाहिए।

अधिवेशन की मुख्य अतिथि राजस्थान गुर्जर महासभा की प्रदेश अध्यक्ष पूर्व मंत्री कालू लाल गुर्जर ने अपने उद्बोधन में प्रदेश स्तर पर सर्व स्वीकृत संगठन राजस्थान गुर्जर महासभा द्वारा सामाजिक हित में किए जा रहे कार्यों की जानकारी साझा करते हुए, सामाजिक कुरीतियों के त्याग की मानसिकता निर्मित करने, बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने, सामाजिक संगठनों द्वारा समाज में रोजगार परक कार्यक्रम चलाने, छात्रावास एवं विद्यालय निर्मित करने की दिशा में कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया। समाज में राजनीतिक चेतना जागृत करने के लिए समय-समय पर होने वाले चुनाव में बिना किसी राजनीतिक भेदभाव के समाज के प्रतिनिधि को आगे बढ़ाना समाज के लोगों को स्वीकार करना चाहिए। हर स्तर पर हम सब मिलजुल कर व्यक्तित्व निर्माण एवं सामाजिक संगठन के कार्य में लगे। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष कालू लाल गुर्जर ने उदयपुर संभाग के संयोजक नाथू लाल गुर्जर को सर्वसम्मति से उदयपुर संभाग कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त करने की घोषणा करने के साथ-साथ, राजस्थान गुर्जर महासभा युवा प्रकोष्ठ राजसमंद जिला कार्य समिति की घोषणा करते हुए संभाग में संगठन कार्य को विस्तार देने का आवाहन किया।

श्री देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष ओमप्रकाश भड़ाणा ने अपने उद्बोधन में समाज की रीति नीति और राजनीतिक अस्तित्व की चर्चा करते हुए देवनारायण बोर्ड में जब से उन्हें दायित्व

मिला है, तब से किए गए कार्यों को समाज के सामने रखा। नाथद्वारा और राजसमंद में बोर्ड द्वारा निर्मित छात्रावासों के संचालन, प्रदेश में अन्य स्थानों पर निर्मित छात्रावास में समाज की बालक-बालिकाओं को प्रोत्साहित करके भिजवाने का आवाहन किया। उन्होंने कहा कि वे समाज के हित के लिए सदैव तैयार है। समाज के लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए उनके दरवाजे हमेशा खुले हुए हैं। महासभा द्वारा प्रदेश भर में किए जा रहे कार्यों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि महासभा ने अभी जो प्रस्ताव पारित किए हैं, उनसे संबंधित मांगों को पूरा करवाने के लिए वे राज्य सरकार के समक्ष समाज का पक्ष रखेंगे।

अधिवेशन के संयोजक नाथू लाल गुर्जर ने अपने उद्बोधन में समाज की ओर से संभागभर से आए हुए प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त किया एवं महासभा नेतृत्व को विश्वास दिलाया कि उन्हें जो दायित्व सौंपा गया है, उसे वे निष्ठा पूर्वक निर्वाह करेंगे।

अधिवेशन के मंचासीन उपस्थित नेताओं ने भी समाज की स्थिति एवं संगठन पर अपने विचार रखते हुए कहा हमें सामाजिक समरसता स्थापित करने, समाज में नशा मुक्ति अभियान चलाने, सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन करने, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता तथा पर्यावरण एवं इतिहास साहित्य एवं संस्कृति संरक्षण की दिशा में कार्य करना चाहिए। इनमें प्रमुख रूप से छोगालाल गिटोरियां, भंवर लाल जी अजमेर, राजसमंद महामंत्री गहरी लाल गुर्जर, जगदीश कमेटी के भोजाराम, बोंराड़ अध्यक्ष मांगीलाल गुर्जर, प्रदेश संगठन मंत्री बजरंग लाल गुर्जर, प्रदेश संयोजक देवकरण गुर्जर, अजमेर संभाग अध्यक्ष कानाराम गुर्जर ब्यावर जिलाध्यक्ष बुधराम गुर्जर, बारां कार्यकारी जिला अध्यक्ष बुद्धाराम, राकेश गुर्जर झुंझुनू जिला अध्यक्ष, भेरूलाल, श्यामलाल उदयपुर, सुखलाल गुर्जर उप प्रधान करेड़ा, शंकर लाल गुर्जर जिला अध्यक्ष भीलवाड़ा, नानजी भाई गुर्जर संस्थापक अध्यक्ष आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट ने भी पर्यावरण चेतना एवं राष्ट्रधर्म माता पन्नाधाय के ऐतिहासिक महत्व पर अपने विचार रखें।

पैदल पुराण

पैदल चलें... पैदल चलते रहें...

1. पैदल चलने से मानसिक संतुलन ठीक रहता है।
2. पैदल चलने से नींद अच्छी आती है।
3. पैदल चलने से शुगर कंट्रोल होती है।
4. पैदल चलने से चिड़चिड़ापन कम होता है।
5. पैदल चलनें से मोटापा नियंत्रित रहता है।
6. पैदल चलनें से फेफड़े मजबूत होते हैं।
7. पैदल चलनें से हार्ट सही कार्य करता है।
8. पैदल चलनें से भोजन पचता है।
9. पैदल चलनें से गैस नहीं बनती।
10. पैदल चलनें से थकान दूर होती है।
11. पैदल चलनें से खून शुद्ध होता है।
12. पैदल चलनें से बुद्धि तेज होती है।
13. पैदल चलनें से हड्डियां मजबूत होती है।
14. पैदल चलनें से आत्मविश्वास बढता है।
15. पैदल चलनें से बल बढता है।
16. पैदल चलनें से त्वचा रोग नहीं होते।
17. पैदल चलनें से वात-पित्त-कफ नियंत्रण में रहते हैं।
18. भोजन के पश्चात् नित्य 300 कदम पैदल चलने से पेट के रोग नहीं होते और मनुष्य की आयु बढ़ती है।
19. पैदल पत्थरों पर नंगे पांव चलने से शरीर में रक्त सुचारू रूप से संतुलित होता है।
20. पैरों के तलवे में रक्त को परिसंचरण करने के लिए सूक्ष्म पम्प होते हैं जिससे रक्त शरीर के हर अंग में जाता है।
21. सूर्य के प्रकाश में नित्य एक घंटा पैदल चलने से डाइबिटीज नहीं होती।
22. ऋषि-मुनियों का सबसे बड़ा योग था पैदल चलना।
23. श्रीराम 14 वर्ष लक्ष्मण के साथ वनों में पैदल घूमें।
24. पांडव जीवन पर्यन्त पैदल चलकर अनेक सिद्धियां प्राप्त करते रहे।
25. पैदल चलें खूब चलें और रात्रि को पैरों की मालिश अवश्य करें।
26. पैदल चलने वालों की इच्छा शक्ति बलवती होती है।
27. पैर ईश्वर ने पैदल चलने के लिए ही दिए हैं।
28. पैदल चलते रहने से सभी जंगली जीव अनेक रोगों से बचे रहते हैं।
29. पक्षियों के पूरे शरीर में जो महत्व पंखों का है, वहीं पैरों का महत्व शरीर के लिए है।
30. पैदल चलने से शरीर गर्म रहता है!
31. पैदल चलते रहने से बहुत से लोग बड़े बड़े विचारक और दार्शनिक बन गये।
32. पैदल चलना ही जीवन है।

पैदल चलें चलते रहें और सबको चलाते रहें।

पूर्व मंत्री हरीशचन्द्र भाटी के पुत्र आशीष भाटी का महाप्रयाण

अखिल भारतीय गुर्जर महासभा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष हरीशचन्द्र भाटी पूर्व मंत्री उत्तरप्रदेश के पुत्र आशीष भाटी का आकस्मिक निधन 7 अक्टूबर, 2025 को हो गया। आशीष भाटी के निधन का समाचार जैसे ही सोश्यल मीडिया

पर वायरल हुआ, पूरे देशभर का गुर्जर समाज हतप्रभ रह गया। आशीष भाटी एक होनहार एवं कुशल व्यवसायी, सामाजिक सरोकारों के धनी थे। अनायास अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण करके 7 अक्टूबर, 2025 को परमपिता परमेश्वर के श्रीचरणों में लीन हो गये। उनकी आत्मिक शांति के लिये परिवारजनों द्वारा रविवार, 19 अक्टूबर, 2025 को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन उनके निवास स्थान, सैक्टर 61 कम्यूनिटी सेन्टर, साईं मन्दिर के पीछे, नोएडा में सम्पन्न हुई। देशभर में समाजसेवी के रूप में जाने-पहचाने हरीशचन्द्र भाटी के पुत्र के निधन पर हजारों की संख्या में सोश्यल मीडिया पर शोक सन्देश प्रसारित हुए वहीं उनके निवास स्थान पर शोक व्यक्त करने वालों का निरन्तर तांता लगा रहा।

गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मोहन लाल वर्मा, महासचिव शैतान सिंह गुर्जर ने भी राजस्थान गुर्जर महासभा, देव चेतना परिवार एवं संस्थान की ओर से शोक व्यक्त किया।

आशीष भाटी के आकस्मिक निधन से पूर्व मंत्री हरीशचन्द्र भाटी, दुष्यन्त भाटी (छोटा भाई), ज्योतिन्द्र देव सिंह (पुत्र), शिवानी प्रधान-विनय प्रधान, शिवांगी सिंह-मनोज सिंह (बहन-बहनोई) सहित समस्त भाटी परिवार शोक संतप्त है।

देशभर से गुर्जर समाज के गणमान्य व्यक्तियों द्वारा उनके

निवास स्थान पर पहुँचकर इस दु:खद घड़ी को धैर्यपूर्वक सहन करने हेतु ढांढस बंधाया।

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रत्येक अध्याय का एक पंक्ति में सार संक्षेप

एक पंक्ति में गीता के 18 अध्यायों का सारांश- अध्यायवार:

अध्याय 1 - जीवन में एकमात्र समस्या गलत सोच है।

अध्याय 2 - सही ज्ञान सभी समस्याओं का अंतिम समाधान है।

अध्याय 3 - नि:स्वार्थता ही प्रगति और समृद्धि का एकमात्र मार्ग है।

अध्याय 4 - हर कर्म को पूजा का रूप दिया जा सकता है।

अध्याय 5 - व्यक्तिगत अहंकार का त्याग करें और अनंत में आनंद पाएं।

अध्याय 6 - प्रतिदिन उच्च चेतना से जुड़ें।

अध्याय 7 - जो कुछ भी सीखा है, उसे जीवन में उतारें।

अध्याय 8 - स्वयं से हार कभी न मानें।

अध्याय 9 - अपने आशीर्वादों का मूल्य समझें।

अध्याय 10 - चारों ओर ईश्वर की उपस्थिति को अनुभव करें।

अध्याय 11 - सत्य को उसी रूप में देखने के लिए पर्याप्त समर्पण रखें।

अध्याय 12 - अपने मन को परमात्मा में लगाएं।

अध्याय 13 - माया से दूर होकर दिव्यता से जुड़ें।

अध्याय 14 - अपने दृष्टिकोण के अनुरूप जीवनशैली अपनाएं।

अध्याय 15 - ईश्वर को सर्वोच्च प्राथमिकता दें।

अध्याय 16 - अच्छा होना अपने आप में एक पुरस्कार है।

अध्याय 17 - प्रिय के बजाय उचित को चुनना शक्ति का प्रतीक है।

अध्याय 18 - सबकुछ छोड़ कर ईश्वर से एकता की ओर बढ़ें। - डॉ. (श्रीमती) शशि तिवारी, आगरा

आओ हम सब मिल-बैठकर समाज के समक्ष उपस्थित चुनौतियों का सामना करें

दिव्य ऊर्जा प्रकृति दृश्य रूप सब रसरंग संसार अव्यक्त शक्ति का ही व्यक्त रूप है। सांसारिक जीवन में स्थिति सापेक्ष असफलता से क्षुब्ध और हताश होना पुरुषार्थ नहीं है, क्योंकि प्रत्येक पुरुषार्थ कर्मों में निजा शक्ति विद्यमान है। पुरुषार्थ कर्म सिद्धि हेतु आस्था, उत्साह, विश्वास, संकल्प, निरंतरता आवश्यक है।

जिन लोगों को भारत के इस शक्ति विज्ञान, आत्म साधना या ईश्वर प्राप्ति संबंध की अनभिज्ञता है, उनका जीवन स्तर मात्र कर्मेंद्रियों से संचालित जीव जीवन है।

वर्तमान भौतिक सभ्यता के दौर में सांसारिक जीवन में व्यवसाय वाद अथवा बाजारवाद ने मानव की स्वयं की पहचान को विस्मृत कर दिया है। अर्थ उपार्जन व उपभोग के अतिरिक्त उनके लिए सभी मानव जीवन मूल्य, संवेदनात्मक संबंध, हतप्रभ से हो गए हैं। इस दौर में व्यक्ति को रुपए ने निगल लिया है। इस अनर्थ कारी अर्थ प्रसार के दौर में जागरूक स्व:- तंत्र-अध्यात्म और धर्म अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। समय रहते अर्थ लालसा के विस्तार को धर्म से नियंत्रित नहीं किया गया तो यौन उन्माद, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, युद्ध और मनोवैज्ञानिक उन्माद पनपेंगे।

सांसारिक जीवन में लौकिक-अलौकिक कामनाओं को पूरा करने की क्षमता दिव्य निज शक्ति स्वरूप विद्यमान है। दिव्य निजा शक्ति को जागृत करने के लिए यथोचित धैर्य और साहस की आवश्यकता है।

सामाजिक दृष्टि से आज व्यक्ति के समक्ष जीवनयापन के क्षेत्र में सर्वाधिक चुनौती भूमण्डलीकरण के युग में तकनीकी विकास, अपसंस्कृतिकरण तथा चारों ओर फैलती नकारात्मकता के कारण आर्थिक असमानता, राजनैतिक अस्थिरता, साम्प्रदायिक तनाव के चलते मनुष्य सामाजिक संकीर्णता और खण्डित होते पारिवारिक सामाजिक सम्बन्धों से चिन्तित है। परम्परागत कृषि व्यवसाय और पशुपालन व्यवसाय का धनी गुर्जर समाज वर्तमान में उसके समक्ष उभरती चुनौतियों से पिछड़ता जा रहा है। वर्तमान में व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा के दौर में खेती और पशुपालन परम्परागत प्रविधि से लाभ का सौदा नहीं रहा है। गांवों से शहरों की ओर मजदूरी अथवा रोजगार के लिये पलायन हो रहा है। अपने अस्तित्व के लिये जैसे-जैसे महानगरों का विकास हुआ है, कृषकों ने अपनी खेती योग्य भूमि को बेचने के लिये विवश होते जा रहे हैं।

परम्परागत सामाजिक लोकाचार और लोक दिखावे के चक्कर में गरीब और गरीब होता जा रहा है। जहाँ तक शिक्षा और संस्कारों की बात है लाखों में कुछ प्रतिभाओं का राजकीय सेवाओं में चयन होने पर हम भले ही खुश हो लें परन्तु वर्तमान अर्थव्यवस्था का रोजगार के प्रति यथार्थ यह है कि अधिकांश शिक्षित युवक-युवतियाँ बेरोजगारी के चलते हताश और निराश हैं। इसके लिये सामाजिक स्तर पर सहकारिता के क्षेत्र में आने वाले समय में रोजगार सृजन के प्रति समाज को ही सोचना पड़ेगा। समाज में परम्परागत रीति-रिवाज नये-नये रूपों में हमारे सामने उभरकर आ रहे हैं। ऐसे में हम समाज सुधार की बातें भले ही कर लें पर उन पर चलना कोई नहीं चाहता है।

वर्तमान समय में सबसे बड़ी आवश्यकता है मानव में विद्यमान प्रछन्न ऊर्जा शक्ति के जागरण और उसके उत्पादकता की दिशा में प्रवाहित करने में है। इसके लिये आवश्यक है कि हम हमारे पूर्वजों के गौरव का पुनरावलोकन करने के

साथ-साथ अपने समाज की राजनैतिक, आर्थिक सामर्थ्य को विकसित करने के लिये सामूहिक रूप से संगठित प्रयास करने की रूपरेखा तय करें।

आज समाज अनेक आशंकाओं और पूर्वाग्रहों के घेरे में सिमटता जा रहा है। संदेह, सामाजिक-आर्थिक असुरक्षा और आपसी अविश्वास जैसी स्थितियाँ उसे उसकी ऐतिहासिक ताकत, एकजुटता और आत्मसम्मान से दूर ले जाती हैं। यह बदलाव केवल आंतरिक मनोवृत्ति को ही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के आत्मविश्वास को भी प्रभावित करता है। जब कोई समाज अपनी गौरवशाली परंपरा से कट जाता है, तो वह बाहरी चुनौतियों के प्रति अधिक असुरक्षित हो जाता है।

गुर्जर समुदाय का जुझारूपन इस बात की याद दिलाता है कि ताकत हमेशा बाहरी साधनों से नहीं आती, बल्कि भीतर की सामूहिक चेतना से जन्म लेती है। आज समय की माँग है कि यह समुदाय अपने अतीत के शौर्य से प्रेरणा लेकर वर्तमान की चुनौतियों का सामना करे। यदि इतिहास हमें सिखाता है कि साधारण जीवन जीते हुए भी असाधारण कार्य किए जा सकते हैं, तो वर्तमान हमें यह पुकार देता है कि पूर्वाग्रह और आशंकाओं की बेड़ियाँ तोड़कर नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ा जाए।

गुर्जर वीरता की परंपरा यह संदेश देती है कि न्याय और स्वाभिमान के लिए खड़ा होना केवल अतीत की जरूरत नहीं, बल्कि आज और भविष्य की भी अनिवार्यता है। जब यह समुदाय अपनी सांस्कृतिक शक्ति, एकजुटता और आत्मनिर्भरता को पुन: केंद्र में लाएगा, तब वह न केवल अपने इतिहास का सम्मान करेगा बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरणा देगा कि साधारण जीवन में असाधारण उपलब्धियाँ संभव हैं।

हमारे अपने समाज की असली शक्ति उसकी परंपरा या इतिहास से अधिक उस ऊर्जा में छिपी होती है जो वर्तमान में उसके लोगों के पास है। यह ऊर्जा हर किसी में अलग-अलग रूप में विद्यमान है- किसी में ज्ञान, किसी में श्रम, किसी में धन और किसी में नेतृत्व की प्रेरणा। अक्सर हम सोचते हैं कि समाज के उत्थान के लिए सबको समान अवसर, समान साधन और समान सफलता चाहिए, परंतु यह दृष्टिकोण अपूर्ण है। सच्चाई यह है कि प्रकृति ने हमें सब कुछ समान रूप से नहीं दिया। किसी के पास धन अधिक है, किसी के पास बुद्धि और विवेक प्रचुर है, कोई श्रम में दक्ष है, तो कोई अपने साहस और कल्पना से समाज को दिशा देने वाला है।

यहीं से एक गहरी समझ जन्म लेती है। हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि समाज में हर व्यक्ति का योगदान अलग है, और वही अलगाव वास्तव में हमारी शक्ति है। यदि संपन्न वर्ग अपने धन को शिक्षा, स्वास्थ्य और नवाचार के लिए लगाता है, तो उसका वह धन केवल उसका नहीं रहता, बल्कि पूरे समाज की प्रगति का आधार बन जाता है। यदि विद्वान अपने ज्ञान का उपयोग समाज को दिशा देने में करते हैं, तो उनकी विद्या केवल अंकों या उपाधियों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह आने वाली पीढ़ियों का मार्ग बन जाती है। इसी तरह यदि श्रमिक वर्ग अपनी निष्ठा और परिश्रम से आधारशिला को मजबूत करता है, तो उसका श्रम केवल उसकी रोजी-रोटी का साधन नहीं रहता, बल्कि पूरे समाज की इमारत का सहारा बनता है।

जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि हमें सब कुछ नहीं मिलता। लेकिन यही विडम्बना एक सुंदर अवसर में बदल सकती है, यदि हम यह समझें कि जो हमारे पास नहीं है, उसकी पूर्ति हमारे साथी कर रहे हैं, और जो हमारे पास है, उससे हम किसी और की कमी पूरी कर रहे हैं। ऐसे में न किसी को अभाव का मलाल रहेगा और न ही किसी को अपनी श्रेष्ठता का अहंकार। हर कोई गर्व के साथ यह कह सकेगा कि वह समाज की एक अपरिहार्य कड़ी है, और उसकी भूमिका दूसरों के समान ही महत्त्वपूर्ण है।

जब हर वर्ग अपनी क्षमता का योगदान सहर्ष करता है, तो एक ऐसा जीवंत तंत्र निर्मित होता है जिसमें किसी का श्रम व्यर्थ नहीं जाता और किसी की शक्ति अकेली नहीं रहती। यह तंत्र किसी मशीन की तरह है जिसमें हर पुर्जा, चाहे बड़ा हो या छोटा, अपनी जगह पर अनिवार्य है। यदि एक भी पुर्जा काम करना बंद कर दे, तो पूरी मशीन रुक सकती है। ठीक इसी तरह समाज भी तब तक प्रगति नहीं कर सकता जब तक हर वर्ग अपनी भूमिका नहीं निभाता और दूसरों की भूमिका का आदर नहीं करता।

सच्चा गौरव इसी में है कि हम जो भी हैं और जैसा भी हमारे पास है, उसे हम समाज की प्रगति में समर्पित कर सकें। यह गर्व का विषय है कि कोई संपन्न वर्ग अपने संसाधनों से शिक्षा की राह बना सके, कोई शिक्षक अपनी विद्या से अगली पीढ़ी गढ़ सके, कोई किसान अपनी मेहनत से खाद्यान्न का

भंडार भर सके और कोई श्रमिक अपने पसीने से समाज की नींव मजबूत कर सके। यही सहयोग, यही विविधता और यही साझा भाव हमें आगे बढ़ाता है।

समाज की वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब हम यह समझें कि हमें सबकुछ अकेले नहीं पाना है, बल्कि हमें सब कुछ मिलकर रचना है। हमारी भूमिका चाहे छोटी लगे या बड़ी, उसका महत्व इस बात से तय नहीं होता कि उसमें कितना दिखावा है, बल्कि इस बात से तय होता है कि वह कितनी ईमानदारी और समर्पण से निभाई गई है। यही सोच हमें आज से भविष्य तक ले जाएगी, यही सोच हमें एकजुट करेगी और यही सोच हमारी विविधता को हमारी असली शक्ति बनाएगी।

युवाओं के लिए पत्रकारिता के क्षेत्र में कैरियर गाइडेंस

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, और इसे मजबूत करना बहुत जरूरी है। आइए, इस करियर को चुनने के लिए युवाओं को आसान और संक्षिप्त तरीके से समझाते हैं।

युवाओं के लिए पत्रकारिता करियर गाइडेंस (संक्षिप्त)

1. सही शिक्षा और जानकारी

पढ़ाई : पत्रकारिता या मास कम्युनिकेशन में ग्रेजुएशन (B.J./B.M.C.) करें। अच्छे कॉलेज चुनें, जहाँ प्रैक्टिकल ट्रेनिंग भी मिलती हो।

समझ : भारत के संविधान और समाज के मुद्दों को समझें, खासकर कमजोर और वंचित लोगों से जुड़े मसलों को।

2. व्यावहारिक अनुभव (प्रैक्टिकल ट्रेनिंग)

इंटर्नशिप : पढ़ाई के दौरान किसी अखबार, न्यूज चैनल या डिजिटल मीडिया हाउस में इंटर्नशिप जरूर करें। इससे काम करने का तरीका सीखने को मिलेगा।

शुरूआत करें : अपने आस-पास के मुद्दों पर रिपोर्टिंग शुरू करें। आप मोबाइल से वीडियो बनाकर या ब्लॉग लिखकर भी शुरुआत कर सकते हैं।

3. नैतिक मूल्यों पर ध्यान दें।

सच और निष्पक्षता : हमेशा सच के साथ खड़े रहें और बिना किसी पक्षपात के रिपोर्टिंग करें।

फैक्ट-चेकिंग : किसी भी ख़बर को फैलाने से पहले उसकी सच्चाई की जाँच जरूर करें, ताकि फेक न्यूज न फैले।

4. डिजिटल मीडिया में महारत

ब्लॉगिंग और सोशल मीडिया : आज के समय में डिजिटल मीडिया बहुत जरूरी है। ब्लॉग लिखना, पॉडकास्ट बनाना और सोशल मीडिया पर अपनी बात रखना सीखें।

पहुंच बढ़ाएं : अपनी बात ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुँचाने के लिए डिजिटल तरीकों का इस्तेमाल करें।

इस तरह, युवा पत्रकारिता को सिर्फ एक नौकरी नहीं, बल्कि समाज के अंतिम व्यक्ति की आवाज बनने का एक सशक्त माध्यम मानेंगे। इससे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ और भी मजबूत होगा और सबको बराबर का मौका मिलेगा।

यह सच है कि भारतीय मीडिया में सभी समाजों की भागीदारी का कोई सटीक डेटा नहीं है, लेकिन यह भी सच है कि हर समाज को मीडिया में प्रतिनिधित्व मिलना जरूरी है। गुर्जर समाज के युवाओं और पूरे समाज के लिए पत्रकारिता के क्षेत्र में आने के लिए प्रेरणादायक संदेश और सलाह-

गुर्जर समाज के युवाओं के लिए संदेश

पत्रकारिता सिर्फ एक पेशा नहीं, बल्कि एक आवाज है। यह वह माध्यम है जिससे आप अपने समाज की समस्याओं और सफलता की कहानियों को दुनिया के सामने ला सकते हैं। गुर्जर समाज का अपना गौरवशाली इतिहास, समृद्ध संस्कृति और ग्रामीण जीवन की कई ऐसी अनसुनी कहानियाँ हैं, जिन्हें मीडिया में जगह मिलनी चाहिए।

जब आप पत्रकारिता में आते हैं, तो आप सिर्फ़ अपने लिए काम नहीं करते, बल्कि आप अपने समाज की आवाज़ बनते हैं। आप उन लोगों के मुद्दों को उठाते हैं, जिन्हें अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है, और लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को मजबूत करते हैं।

युवाओं के लिए पत्रकारिता में आने की सलाह

1. शिक्षा पर ध्यान दें

सिर्फ जुनून काफी नहीं है, आपको सही शिक्षा की ज़रूरत है। पत्रकारिता या मास कम्युनिकेशन में डिग्री लें। यह आपको रिपोर्टिंग, एडिटिंग और मीडिया के कानूनी पहलुओं को समझने में मदद करेगा।

2. अपनी जड़ों से जुड़ें

अपने समाज, उसके इतिहास, परंपराओं और चुनौतियों को गहराई से समझें। जब आप अपने समाज को अच्छी तरह जानेंगे, तभी आप उसकी सच्ची और प्रभावी कहानियों को दुनिया के सामने ला पाएँगे।

3. डिजिटल मीडिया को अपनाएँ

आजकल डिजिटल मीडिया सबसे बड़ा प्लेटफॉर्म है। आप अपने गाँव या शहर के मुद्दों पर ब्लॉग लिख सकते हैं, मोबाइल से वीडियो रिपोर्ट बना सकते हैं या पॉडकास्ट शुरू कर सकते हैं। इसके लिए किसी बड़े संस्थान की जरूरत नहीं है।

4. निष्पक्षता और सच्चाई को प्राथमिकता दें

एक अच्छे पत्रकार के लिए सबसे जरूरी गुण है निष्पक्षता। अपने समाज की बात उठाने का मतलब यह नहीं है कि आप सच को छोड़ दें। हमेशा सच्चाई के साथ खड़े रहें और हर मुद्दे को निष्पक्षता से दिखाएँ। यही सच्ची पत्रकारिता है।

5. नेटवर्क बनाएँ : पत्रकारिता में नेटवर्क बहुत जरूरी है। अन्य पत्रकारों, मीडिया हाउस और अपने क्षेत्र के लोगों से जुड़ें। इंटर्नशिप करें और छोटे-छोटे प्रोजेक्ट पर काम करके अनुभव प्राप्त करें।

समाज के लिए संदेश

गुर्जर समाज के वरिष्ठों और युवाओं को एक-दूसरे का समर्थन करना चाहिए। समाज के बुजुर्गों को युवाओं को पत्रकारिता में आने के लिए प्रेरित करना चाहिए और उन्हें सही मार्गदर्शन देना चाहिए। युवाओं को यह समझना चाहिए कि उनका काम सिर्फ खबरें दिखाना नहीं, बल्कि समाज को सशक्त बनाना है।

जब आप पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाएँगे, तब आप न केवल अपने समाज का मान बढ़ाएँगे, बल्कि आप उन आने वाली पीढ़ियों के लिए भी रास्ता खोलेंगे जो मीडिया में अपना करियर बनाना चाहते हैं। आपकी भागीदारी से भारतीय मीडिया और भी समावेशी और मजबूत बनेगा।

श्रद्धेय दत्तोपंत ठेंगड़ी स्मृति एवं सामाजिक समरसता दिवस

श्रद्धेय स्व. दत्तोपंत ठेंगड़ी जी की पुण्यतिथि 14 अक्टूबर को भारतीय मजदूर संघ ने सामाजिक समरसता दिवस के रूप में मनाना स्वीकार किया है।

भारतीय मजदूर संघ देश को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में खड़ा करने तथा भारतमाता को पुन: विश्व गुरु के स्थान पर प्रतिष्ठापित करने का संकल्प लेकर मजदूर क्षेत्र में काम कर रहा है। लेकिन इस संकल्प को साकार रूप देने के लिए यह आवश्यक है कि समाज के प्रत्येक घटक का सम्यक विकास हो। हम जानते हैं कि इस विकास के मार्ग में अनेक बाधाएँ हैं। पहले उन बाधाओं को दूर करने का प्रयास करना होगा।

हम जानते हैं कि आज समाज में वर्ग भेद, जाति भेद, अस्पृश्यता, अंधविश्वास, रूढ़वादिता परम्परा कायम है। उसे मिटाकर सामाजिक समरसता स्थापित करना आवश्यक है। आज इन बुराइयों के कारण समाज का बहुत बड़ा हिस्सा अलग-थलग पड़ा हुआ है। उसे समाज के मुख्य प्रवाह में जोड़ना हमारा कर्त्तव्य है। यही कार्य डॉ. अम्बेडकर ने किया। उसी को जारी रखने के लिए ठेंगडी जी ने 'सामाजिक समरसता मंच' की स्थापना की।

समरसता से ही एकात्म समाज का गार्ग प्रशस्त होगा। समरसता से समानता और संगठन का प्रयास और संघटन के आधार पर ही वैभवपूर्ण शक्तिशाली राष्ट्र का सपना साकार होगा, ऐसा ठेंगड़ी जी कहते थे।

हम सिर्फ मजदूर नहीं हैं, इस समाज के अभिन्न घटक हैं। राष्ट्र के उन्नयन में जो-जो बाधाएँ हैं उसको दूर करने में साकात्मक भूमिका अदा करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है।

भारतीय मजदूर संघ का गीत है- 'मानवता के लिए उषा की किरण जगाने वाले हम। शोषित, पीड़ित,वंचितजनों का भाग्य बनाने वाले हम।' इस ध्येय की पूर्ति तभी सम्भव है जब सम्पूर्ण मानव मानवीय गुण,कर्म, स्वभाव से समरस होगा।

समरसता दिवस के अवसर पर उपेक्षित दलित बन्धुओं के साथ सहभोज, रात्रि पाठशाला, स्वास्थ्य परीक्षण, गरीबों के लिए रक्तदान तथा समरसता का भाव जागृत करने वाले अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, ऐसा आप सभी से आग्रह हैं। ऐसे कार्यक्रम अनवरत रूप से चलते रहने चाहिए तभी हमारा 'समाज समरस' हो पायेगा।

श्री रामधाम ट्रस्ट पुष्कर में हर वर्ष की भाँति परम्परागत अन्नकूट उत्सव सम्पन्न हुआ

पुष्कर, 25 अक्टूबर। गुरुदेव श्री रणछोड़दास जी महाराज की जयपुर स्थित गलता तीर्थ स्थल के संत पयोहारी जी की शिष्य परम्परा के प्रसिद्ध संतों में 11वें स्थान पर गणना होती है। श्री रामधाम ट्रस्ट पुष्कर के अध्यक्ष राज्यपाल शर्मा एवं अहमदाबाद गुजरात से आये ट्रस्टी दिनेश भाई रूपारेलिया ने बताया कि श्री रामधाम पुष्कर में परमहंस श्री रणछोड़दास जी के द्वारा 1965-66 में रामधाम की स्थापना एक छोटी सी कुटिया बनाकर मानव कल्याण हेतु प्रारम्भ की गई। उनके अनुयायी आज भी सन्तश्री के आदेशानुसार रामधाम में सेवाकार्य संचालित कर रहे हैं। सद्गुरु श्री रणछोड़दास जी मूलरूप से चित्रकूट उनकी तपोस्थली रही है जहाँ उन्हें हनुमान जी के प्रत्यक्ष दर्शन हुए। उसके पश्चात् से वे सदैव मानव सेवाकार्य में लगे रहे। उनकी सेवा का आदर्श 'अंधों को आँख, भूखे को भोजन और निर्वस्त्र को वस्त्र' उपलब्ध करवाना रहा है। यथार्थ में रणछोड़दास जी मानवतावादी सन्त हुए हैं। चित्रकूट अनसूया में उनके सान्निध्य में सेवाकार्य प्रमोदवन में रीवा नरेश के सहयोग से सद्गुरुदेव संघ द्वारा 1950 में प्रथम नेत्रदान शिविर सम्पन्न हुआ। जबसे अभी हाल ही में 116वाँ श्री तारा नेत्रदान यज्ञ सम्पन्न हुआ है। सन्तश्री ने 1970 में रघुवीर मुम्बई में 19 अप्रैल चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को अपनी देह छोड़ी, तत्पश्चात् उनके संकल्प के अनुसार पुष्कर स्थित कुटिया एवं रामधाम स्थल में वे समाधिस्थ हुए। जहाँ रामधाम ट्रस्ट द्वारा व्यापक स्तर पर सेवा कार्य निरन्तर सम्पन्न हो रहे हैं।

दिनेश भाई रूपारेलिया ने बताया कि रामधाम पुष्कर एक धार्मिक-सेवात्मक संस्था है, जिसका मुख्य केंद्र श्री रामधाम आश्रम-मंदिर परिसर है।

संस्था का उद्देश्य : भक्तिपूर्वक अस्तित्व के साथ-साथ सामाजिक-सेवा को भी आगे बढ़ाना है।

संस्था की मुख्य गतिविधियाँ : पूज्य गुरुदेव श्री रणछोड़दासजी महाराज ने स्वयं श्री रामधाम को अपने पूजन स्थल के रूप में चुना था। उनके आशीर्वाद से यहाँ वर्षभर अनेक गतिविधियाँ और आयोजन होते रहते हैं।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यहां पर साधकों को साधना के लिए लंबे अरसे तक रहने की सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं।

एयरकंडीशनर कमरों में नि:शुल्क रहने की, भोजन की और साधकों को साधना के दौरान किसी भी प्रकार की शारीरिक तकलीफ हुई, तो चिकित्सालय की सुविधाएं उपलब्ध हैं।

गौ-सेवा : ट्रस्ट गायों की सेवा को महत्त्वपूर्ण मानता है। 'गौ-सेवा परंपरागत आश्रम-मूल्यों का अंग है।'

मधुकारी (भोजन सेवा): दैनिक रूप से साधु और गरीब व्यक्तियों को दो-पल भोजन उपलब्ध करवाया जाता है।

विद्यार्थी-सेवा : धार्मिक रीति-नीति सीखने वाले छात्र-छात्राओं के लिए व्यवस्थान्तर्गत ट्रस्ट उनके लिए आर्थिक समर्थन भी करता है।

पूजा-कर्म, धार्मिक आयोजन : वर्षभर विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम, सत्संग आदि होते हैं।

इतिहास एवं गुरु-संबंधी जानकारी :

ट्रस्ट की स्थापना के गुरु-मार्गदर्शक श्री रणछोड़दास जी महाराज थे, जिन्होंने इस स्थान को 'चयनित पूजा-स्थल' के रूप में पसंद किया था।

गुरुजी ने उद्घोष किया था कि सिर्फ भक्ति पर्याप्त नहीं, बल्कि 'सेवा' भी धर्म की पूर्ति है।

कुल मिलाकर इस दिव्य, आध्यात्मिक वातावरण में साधकों के साथ सभी आगंतुक भक्तों को भी अलौकिक, मानसिक शांति की अनुभूति होती है। रामधाम द्वारा सबसे महत्वपूर्ण कार्य साधकों को साधना के लिए नि:शुल्क सुविधाएँ उपलब्ध करवाना है।

संयोगवश गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान के अध्यक्ष एवं देव चेतना पत्रिका सह सम्पादक डॉ. दक्षा जोशी के पुष्कर आगमन पर शोध संस्थान के सचिव लक्ष्मण गुर्जर, राजस्थान गुर्जर महासभा अजमेर जिलाध्यक्ष भंवर लाल चोपड़ा, प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मोहनलाल वर्मा ने शिष्टाचार भेंट करते हुए डॉ. दक्षा जोशी एवं उनकी पुत्री रूचि तथा दिनेश भाई रूपारेलिया का राजस्थान आगमन पर स्वागत सत्कार एवं अभिनन्दन किया। उनके अनुरोध पर मुझे भी सौभाग्यवश श्री रामधाम पुष्कर में ट्रस्ट द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। रामधाम द्वारा मानव कल्याण हेतु किये जा रहे कार्यों का अवलोकन तथा सत्संग में भाग लेने के साथ-साथ ट्रस्टियों से परिचय एवं परिचर्चा का अवसर प्राप्त हुआ।

गुर्जर छात्रावास सांवली रोड, सीकर में सम्पन्न हुआ दीपावली स्नेह मिलन एवं प्रतिभा सम्मान समारोह

सीकर। गत 23 अक्टूबर को स्थानीय गुर्जर छात्रावास सांवली रोड़, सीकर में गुर्जर प्रतिभा सम्मान समारोह एवं दीपावली स्नेह मिलन समारोह आयोजित हुआ। समारोह का आयोजन गुर्जर कर्मचारी अधिकारी कल्याण परिषद् एवं समाज सेवक संघ ने किया।

राजकीय सेवाओं में चयनित 70 प्रतिभाओं, बोर्ड परीक्षा में कक्षा 10 और 12 में 85 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल करने वाले 250 मेधावी छात्र-छात्राओं सहित खेल, नीट, जेईई में चयनित 30 प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। भामाशाह रामचंद्र चनेजा सहित 40 भामाशाहों का साफा बांधकर और प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि राजस्थान गुर्जर कर्मचारी अधिकारी कल्याण परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद जी तंवर, प्रदेश के महासचिव हंसराज जी गुर्जर जयपुर, विशिष्ठ अतिथि IPS विजय सिंह

गुर्जर, जयराम जी गुर्जर खाद्य एवं आपूर्ति अधिकारी जयपुर, नवचयनित RAS विनोद बोकण, मोटिवेशनल स्पीकर धीर सिंह धाभाई एवं साहिल गुर्जर, राजस्थान गुर्जर महासभा के कार्यकारी प्रदेशाध्यक्ष श्री मोहन लाल जी वर्मा आदि वक्ताओं ने कार्यक्रम में सम्मानित होने के लिए उपस्थित समाज की प्रतिभाओं को भविष्य की चुनौतियों एवं रोजगार के अवसर वं सम्भावनाओं पर प्रेरित किया।

गुर्जर कर्मचारी अधिकारी कल्याण परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष ने जयपुर में निर्माणाधीन संगठन के भवन के निर्माण पर चर्चा की एवं प्रदेश के महासचिव हंसराज जी ने विभिन्न जिलों में गुर्जर छात्रावास निर्माण की आवश्यकता, स्थिति एवं प्रगति पर रिपोर्ट पेश की।

कार्यक्रम को विशिष्ठ आतिथ्य एवं सानिध्य प्रदान करने के लिए पधारे बुधगिरी मंडी के महाराज संत श्री दिनेश गिरी जी महाराज ने समाज में बढ़ती विकृतियों एवं चुनौतियों को समझकर संस्कारों को सहजते हुए शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए देश के विकास में अपना सहयोग सुनिश्चित करने का आह्वान किया। बिना तनाव के शिक्षा ग्रहण कर जीवन को समझने की प्रेरणा प्रदान की।

IPS विजय सिंह गुर्जर ने सम्पूर्ण समाज में बालिका शिक्षा के एवं शिक्षा के प्रसार हेतु मोटिवेशन शिविर एवं प्रतिभा सम्मान समारोह के आयोजनों की महति भूमिका बताते हुए आयोजनों की आवश्यकता पर बल दिया। सोशल मिडिया के नकारात्मक प्रभावों एवं शिक्षा में बाधा को लेकर प्रो. धीर सिंह ने अपना जीवन लक्ष्य तय करने एवं उसके प्रति समर्पण विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में गुर्जर छात्रावास के द्वितीय मंजिल के

निर्माण में सहयोग प्रदान करने वाले भामाशाहों, गुर्जर इतिहास साहित्य शोध संस्थान में पुस्ताकों के रखने हेतु 10 बड़ी आलमारियों की घोषणा करने वाले भामाशाहों का, कक्षा 10 व 12 में 85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाली प्रतिभाओं, राजकीय सेवा में नवचयनित प्रतिभाओं, खेलों में व IIT, NEET, CLAT में चयनित प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।

छात्रावास के संचालक पूर्व मुख्य लेखाधिकारी अर्जुन लाल गुर्जर ने छात्रावास प्रतिवेदन एवं स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए सभी भामाशाहों का आभार व्यक्त किया। छात्रावास संरक्षक रामचन्द्र जी चनेजा ने 31 लाख रू के सहयोग से छात्रावास में एक बड़ा हॉल का निर्माण करवाया गया हैं। जिसका उद्घाटन एवं छात्रावास में नवनिर्मित डिजिटल लाइब्रेरी का भी उद्घाटन करवाया गया।

इस अवसर पर श्री शैतान सिंह जिलाध्यक्ष गुर्जर महासभा, दुर्गा प्रसाद धाभाई, पोखर मल गुर्जर, नवल किशोर जी गुर्जर, कुल्डाराम धाभाई, अमिकेश प्रधानाचार्य, बृजमोहन गुर्जर, सरपंच गौतम गुर्जर, राजु गुर्जर, बद्रीप्रसाद लादी, जगदीश प्रसाद चनेजा, देवरा पूर्व सरपंच मंगेजराम गुर्जर, डाबपनोरा सरपंच बन्ना राम गुर्जर, मोहन गुर्जर, नरेन्द्र हरसाना डिप्टी डायरेक्टर पशुपालन, जयपाल गुर्जर, डॉ राकेश गुर्जर, ख्याली राम गुर्जर पूर्व जिला महामंत्री झुंझुनू, सुरेश बजाड़ अध्यक्ष ब्लॉक कांग्रेस कमटी दांतारामगढ़ आदि सैकड़ों लोग एवं सैकड़ों विधार्थी महिलाएं उपस्थित रहें। कार्यक्रम का संचालन रामेश्वर गुर्जर अध्यापक एवं दामोदर प्रसाद चौहान आंतरी ने किया।

गुर्जर छात्रावास सांवली रोड़ सीकर की निर्माणाधीन द्वितीय मंजिल के लिए सहयोग करने वाले भामाशाहों की सूची सत्र- 2025

1. नारायण लाल सराधना/श्री देवाराम सराधना बीकानेर 151000
2. अर्जुनलाल, भागुराम, पोखरमल बोकण/ श्री लालूराम जी बोकण हर्ष 151000

3. पूर्णमल, रामगोपाल बनवारी लाल चौहान/ श्री मंगेजाराम आंतरी 151000
4. भगवान सहाय, श्योपाल राम सुवालाल/ श्री लादुराम बारवाल चिहाला 151000
5. तेजाराम हाकला/श्री लाखुराम हाकला, दुला की ढाणी 151000
6. राजेश गुर्जर/श्री रामू राम बोकण, हर्ष 151000
7. डॉ. रविन्द्र धाभाई / श्री किशोर सिंह धाभाई ,सीकर 51000
8. भंवरलाल, रामस्वरूप, प्रभुदयाल चौहान/ श्री सुरजाराम चौहान , शिश्यू 151000
9. बनवारीलाल डोई श्री चन्द्राराम डोई पुरोहित का बास 151000
10 सुनील कुमार धेधड़ श्री आशाराम धेधड़ , हीरवास 151000
11. बाबूलाल, लक्ष्मणराम मदनलाल, प्रेम, बंशीधर, किशोर डोई / श्री हनुमान डोई चौधरीवाली ढाणी हात्याज 151000
12. कुरड़ाराम धाभाई/ श्री मदनलाल धाभाई लक्ष्मणगढ़ 201000
13. ओमप्रकाश, भंवरलाल, महावीर मणकस / श्री रामप्रताप मणकस, रेटा 151100

14. धीरसिंह धाभाई / श्री भंवर सिंह धाभाई , बीबासर 51000
15. सीताराम धाभाई/ श्री महादेव सिंह धाभाई, सिहोट छोटी 51000
16. रूड़मल बागड़ी/श्री हनुमान जी,मोहनपुरा 51000
17. श्री सुखराम गोरसी (BND Hostel) सीकर, नाथावाला 151000
18. बीरबल सिंह/श्री जवाहर सिंह खटाणा, रघुनाथगढ़ 151000
19. सांवरमल गिराटी श्री भैर जी गिराटी भादवासी 151000
20. श्रवण धाभाई / श्री कुरड़ाराम धाभाई, डालमास 50000
21. कैलाश, राजेन्द्र धाभाई / श्री किशनाराम धाभाई, डालमास 50000
22. महेंद्र सिंह/ श्री रामनिवास खेड़ी राड़ान 51000
23. डॉ. बनवारी लाल/श्री पूसाराम हाकला, गोविन्दपुरा 51000
24. महावीर / श्री मंगलचंद अलगर, खंडेला, 151000 + साथ में 50000 रुपये का ग्रेनाइट
25 सुरज्ञान बोकण/श्री सांवरमल बोकण, रघुनाथगढ़, 151000
26. रतन लाल/ श्री कजोड़ मल हाकला, दुला की ढाणी, 151000
27. एडवोकेट भेभाराम चनेजा /श्री प्रभुदयाल, दुला की ढाणी 151000
28. बलबीरसिंह / श्री गोरधन
हाकला, दुला की ढाणी 51000/
29. बजरंग लाल , दुर्गा प्रसाद / श्री लक्ष्मण राम जी धाभाई, सिहोट छोटी 51000
30. श्री गोविंद राम धाभाई / श्री बन्नाराम धाभाई बुटोली पलासरा 51000
31. डॉ राकेश मणकस/ श्री श्रवण कुमार मणकस, चैनगढ, 100000
32. रामचंद्र चनेजा/ श्री मुन्ना राम चनेजा, देवलानाडा, चनेजा हाल निर्माण अनुमानित 3100000 (इक्तीस लाख)
33. छात्रावास के पूर्व छात्रों द्वारा आर्थिक सहयोग 171000 (महेश चौहान S/o रुघाराम चौहान, गुरारा, खंडेला के द्वारा 40 हजार रुपये की एक AC)
34. रतनलाल धाभाई पुत्र श्री भागूराम धाभाई, सिहोट छोटी, 51000
35. नरेश कुमार हाकला / श्री तेजाराम हाकला, देवलानाडा, 51000 (वाटर कुलर)
36. दुर्गा प्रसाद चनेजा/ श्री गोविंदा राम जी (चारण का बास) 51000
37. लक्ष्मण राम / श्री मूंगाराम कसाना, सुंदरपुरा, 151000
38. कजोड़ मल, धूड़मल, डालुराम / श्री नारायण लाल डोई, सकराय 51000
39. श्री प्रभु दयाल हाकला पूर्व सरपंच , पुरोहित का बास, 51000
40. बंशीधर चनेजा /श्री पन्नालाल चनेजा, पिपराला, 51000
41. भंवरलाल/ श्री हनुमान राम, आसपुरा, 51000
42. शैतान सिंह चौहान/श्री लच्छाराम चौहान, शोभ पलासरा (गेस्ट हाऊस ब्लॉक में एक कमरा)
43. शैतान सिंह धाभाई/ श्री मोटाराम धाभाई, भैरूपुरा (गेस्ट हाउस ब्लॉक में एक कमरा)
44. छगन लाल चनेजा, प्रहलाद/श्री बुधाराम चनेजा (श्रीगौत्तम चनेजा सरपंच चैनपुरा) अनुमानित 400000 (चार लाख)
छात्रावास अधीक्षक के लिए मुख्य कार्यालय बाबत
45. .....
भवन निर्माण हेतु कुल राशि :- 8209000
छात्रावास में संचालित गुर्जर इतिहास एवं शोध संस्थान के पुस्तकालय हेतु :-
1. श्री राजेन्द्र सिंह सिराधना, बीकानेर 160000 रुपये की लाइब्रेरी के लिए पुस्तकें
लाइब्रेरी के लिए आलमारियां :-
1. एडवोकेट भेभाराम चनेजा, दुला की ढाणी, 20000
2. श्री रतनलाल हाकला, अतिरिक्त विकास अधिकारी, दुला की ढाणी, 20000
3. श्री गोपीनाथ जी गुर्जर, खंडेला, 20000
4. श्री गोपीराम जी हाकला, ठिकरिया, से. नि. कृषि अधिकारी 20000
5. श्री रणवीर गुर्जर, जय श्री बीज भंडार, नवलगढ़ 20000
6. श्री सुभाष, पुरोहित की ढाणी, 20000
7. श्री शंकर लाल बोकण, अध्यापक, रेटा 20000
8. श्री पोखर मल बोकण, उप प्राचार्य, हर्ष, 20000
गुर्जर इतिहास शोध संस्थान बाबत कुल राशि- 320000
कुल राशि- 8529000 अनुमानित।

विश्व गुर्जर समाज ट्रस्ट की स्थापना के लिये गुजरात के पूर्व गृहमंत्री गोरधन भाई झड़फिया की पहल रंग लायेगी

अखिल भारतीय स्तर पर गुर्जर समाज के सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक राजनैतिक उत्थान के लिये समाज के प्रबुद्धजन लम्बे समय से सुदृढ़ कार्ययोजना बनाने के लिये प्रयत्नशील रहे हैं। प्रमुख रूप से गुजरात के पूर्व गृहमंत्री गोरधन भाई झड़फिया

के प्रयासों से गुजरात में इस दिशा में कुछ सकारात्मक प्रयास हुए हैं। गोरधन भाई झड़फिया समय-समय पर समाज के विविध क्षेत्रों में कार्य कर रहे संगठक सामाजिक कार्यकर्ताओं से इस विषय में चर्चा करते रहे हैं। गुजरात में नानजी भाई गुर्जर अखण्ड भारत गुर्जर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. देवनारायण गुर्जर, राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश अध्यक्ष कालूलाल गुर्जर एवं मेरे साथ भी उनकी इस विषय में चर्चा हुई है। विडियो कॉन्फ्रेंस पर समाज की होने वाली मीटिंगों में भी उन्होंने इस विषय को प्रबुद्धजनों के समक्ष कई बार रखा है।

प्रसन्नता का विषय है अन्ततोगत्वा अभी हाल ही में अहमदाबाद में इस विषय को लेकर समाज के गणमान्य लोगों ने बैठक आयोजित की। बैठक में गोरधन भाई झड़फिया की पहल पर विश्व गुर्जर समाज ट्रस्ट की स्थापना हुई। अहमदाबाद गुजरात में आयोजित बैठक में ट्रस्ट के ट्रस्टियों ने एक कार्ययोजना इस दिशा में निर्मित की है। उनकी यह कार्यवाही स्वागतयोग्य है।

राजस्थान के कुलदीप सिंह महुवा ने उक्त बैठक में भाग लेने के पश्चात् बताया कि जल्द ही दिल्ली NCR में सिविल सर्विसेज एवं बिजनेस सेन्टर को शुरु करने की कार्ययोजना बनी। बैठक में सर्वश्री गोरधन भाई झड़फिया (पूर्व मंत्री गुजरात) के सान्निध्य में श्री अंतराम तँवर (राष्ट्रीय अध्यक्ष गुर्जर समन्वय समिति), श्री सतीश भाई पटेल जी(अध्यक्ष कुर्मी पाटीदार महसभा), श्री मुकेश चौधरी (MLA नकुड़ सहारनपुर), श्री रघुवीर पटेल (चैयरमैन देवनारायण बोर्ड MP), श्री डा. कुलदीप सिंह महुआ, श्री इंद्राज विधूड़ी, श्री हरिओम बैंसला, श्री देवराज भड़ाना, श्री अनिरुद्ध पटेल, श्री दिनेश गुर्जर पांचोली उपस्थित रहे।

बैठक के पश्चात् गोरधन भाई झड़फिया ने ट्रस्ट की स्थापना के लिये सभी उपस्थित मैनेजिंग ट्रस्टियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज में इसकी आवश्यकता बहुत समय से महसूस की जा रही थी पर संभव नहीं हो पा रहा था। आपने आने वाली पीढ़ी के लिए बहुत ही उपयोगी एवं सार्थक कदम उठाया है।

राजस्थान में डॉ. कुलदीप महुआ काफी समय से भावी पीढ़ी की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में सहभागिता को लेकर चिंतित एवं प्रयासरत रहे हैं। उनकी

शिक्षा ज्योति योजना राजस्थान की स्थिति को देखते हुए एक अच्छा विकल्प है। आपका यह निर्णय निश्चित रूप से भावी पीढ़ी के लिए वरदान साबित होगा।

डॉ. कुलदीप ने कहा कि हमने सरदार सरोवर धाम की बहुत प्रशंसा सुनी है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपके नेतृत्व में यह ट्रस्ट भी जल्द ही राष्ट्रीय स्तर पर सरदार धाम सिद्ध होगा।

भारत की बिखरी हुई गुर्जर समाज की विभिन्न शाखाओं को जोड़ने का आप एक भागीरथी प्रयास कर रहे हैं। भगवान से प्रार्थना है कि इस एकीकरण जैसे चुनौतीपूर्ण एवं कठिन कार्य में आपको सफलता प्राप्त हो।

राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयनित गुर्जर गौरव

राजस्थान प्रशासनिक सेवा में समाज के लाखों युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत R.A.S. में चयनित हुए समाज के सभी युवक-युवतियों को प्राप्त सफलता से सम्पूर्ण समाज अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहा है।

1. आनंद गुर्जर (डुमरिया) बयाना
2. प्रीति बैंसला (बरोदा) बयाना
3. विजेंद्र कॉमर (घुनैनी) बयाना
4. दिलीप गुर्जर अंधाना (हिंगोटा) बसेड़ी
5. सचिन पोसवाल (दांदीपुरा) बसेड़ी
6. सुमन गुर्जर (बहादुरपुरा) निवाई
7. शंकरलाल गुर्जर (बनस्थली) टोंक
8. मुकुट गुर्जर (खिड़गी) निवाई
9. जितेंद्र गुर्जर (पीपलू)
10. राजेश कुमार गुर्जर (पीपलू)
11. दिनेश गुर्जर (कुडेर) उनियारा
12. नरेंद्र गुर्जर (मोही) टोंक
13. सुभाष बांसरोटा (बांसदा) चौथ का बरवाड़ा
14. नीतू बजाड़ (गरनिया) जैतारण
15. राजेश खटाना (समसपुर) महवा दौसा
16. मनीष कुमार गुर्जर (दौसा)
17. किन्नू गुर्जर नयागांव (दौसा)
18. बबली बैंसला (बांदीकुई) दौसा
19. शीलू धाभाई बराला
20. नीतू धाभाई, बराला
21. देवेंद्र सिंह खटाना
22. संदीप कसाना (खुडा) मासलपुर करौली
23. दुष्यंत गुर्जर (कोटपुतली)
24. सौरभ गुर्जर (मोतीपूरा) गंगापुर सिटी
25. रीना गुर्जर
26. चंद्रभान गुर्जर (बघेरी खुर्द) खैरथल
27. दामोदर भडाना हेदरीपुरा
28. शिवांगी गुर्जर (मोर्धा) कोटपुतली
29. सुनील कुमार तंवर (नूरपुर)
30. देवेंद्र भडाना (हैंतपुरा) चौथ का बरवाड़ा
32. समीक्षा गुर्जर (नरसिंहपुरा) करौली
33. कुलदीप कसाना (निसूरा)
34. कैलाश पोसवाल (शाहपुरा) जयपुर
35. धर्मवीर गुर्जर (799)
36. समीक्षा खटाना बयाना, भरतपुर
37. रजनीश गुर्जर (सब-इंस्पेक्टर)
    ग्राम-गहलउ, उच्चैन, भरतपुर
38. ध्रुव गुर्जर ग्राम-खरगपुर, बाड़ी, धौलपुर
39. सोनू मावई (मावई नगला-भदियाना) बाड़ी, धौलपुर
40. ऋतु कांदिल (करका खेरली) धौलपुर।

उपरोक्त के अतिरिक्त भी जिन्होंने सफलता प्राप्त की है उनमें श्री नरेन्द्र गुर्जर (मोही, बीगोद) अध्यापक का राजस्थान प्रशासनिक सेवा के लिए चयन हुआ है।

नव चयनित आर.ए.एस.

श्रीमती मंजू कराहणा पत्नी स्व. श्री राजेन्द्र सिंह, पुत्रवधू श्री केसू चेयरमैन गांव नगलिया, औद्योगिक क्षेत्र भिवाड़ी की पहली महिला आर.ए.एस. है। जिन्होंने संघर्ष के, वैधव्य के, पिछड़े वर्ग के, घूंघट के सारे बंधन चीरते हुए इस प्रतिभा ने क्षेत्र का नाम रोशन किया।

राजस्थान गुर्जर महासभा पूर्व जिला महामंत्री अजमेर महावीर खटाणा नारेली ने बताया कि ''हमारे पूरे परिवार के लिए अत्यंत गर्व और अपार खुशी का क्षण है। मेरी पुत्रवधू **रोहिणी पत्नी संजय गुर्जर** ने अपनी मेहनत, लगन और धैर्य के बल पर राजस्थान प्रशासनिक सेवा (R.A.S.) परीक्षा के तीनों चरण- प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार- सफलतापूर्वक उत्तीर्ण कर R.A.S. अधिकारी नियुक्त हुई है।

उनकी इस सफलता के पीछे वर्षों की कठिन मेहनत,

संघर्ष और जीवन के अनेक दु:ख छिपे हैं, जिन्हें उन्होंने हिम्मत, आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प से पार किया। आज रोहिणी गुर्जर न केवल हमारे परिवार का गौरव हैं, बल्कि उन सभी के लिए प्रेरणा हैं जो कठिन परिस्थितियों में भी अपने सपनों को साकार करने का साहस रखते हैं।'

'संघर्ष जितना बड़ा होता है, सफलता उतनी ही उज्जवल होती है।' हमारे पूरे परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाइयाँ और शुभकामनाएँ।''

आरएएस परीक्षा 771वीं रैंक : करेड़ा के कैलाश गुर्जर

करेड़ा उपखंड के गोवर्धनपुरा निवासी **कैलाश गुर्जर** ने आरएएस परीक्षा में 771वीं रैंक और एमबीएस वर्ग में 21वीं रैंक प्राप्त की। कैलाश ने पहले ही प्रयास में सफलता हासिल कर क्षेत्र का नाम रोशन किया। कैलाश के पिता गोवर्धनलाल किसान, माता गृहणी, छोटा भाई लक्ष्यराज व बहन माया टीचर की तैयारी कर रही हैं।

चाचा-भतीजे को एक साथ मिली सफलता

डारडातुर्की गांव के **जितेन्द्र कुमार गुर्जर** (126वीं रैंक) और **राजेश गुर्जर** (1043वीं रैंक) ने एक ही परिवार से सिविल सेवा परीक्षा में सफलता प्राप्त की। दोनों एलडीसी पद पर कार्यरत थे और सेल्फ-स्टडी से तैयारी की। उन्होंने युवाओं को संदेश दिया- सोशल मीडिया के व्यर्थ ज्ञान से दूर रहें और किताबों को अपना साथी बनाएं।

राजस्थान गुर्जर महासभा एवं देव चेतना पत्रिका परिवार की ओर से सभी चयनित प्रशासनिक अधिकारियों के उज्ज्वल भविष्य के लिये हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

शिक्षा से ही सामाजिक उत्थान संभव

कैमरी में गुर्जर समाज का 17वां राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान समारोह सम्पन्न

नादौती। जगदीश धाम कैमरी में गुर्जर समाज का 17वां राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित हुआ। जगदीश धाम देववाणी गुर्जर पत्रिका के तत्वावधान में हुए आयोजन में दिल्ली, हरियाणा, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र सहित कई राज्यों से बड़ी संख्या में समाजबंधु शामिल हुए। समारोह का उद्देश्य समाज के प्रतिभाशाली युवाओं को प्रोत्साहित कर उन्हें आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करना था।

इस अवसर पर शिक्षा, खेल, सामाजिक सेवा और अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 500 से अधिक प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व विधायक एवं अखिल भारतीय गुर्जर महासभा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष गोपीचंद गुर्जर थे, जबकि अध्यक्षता जनार्दन राय यूनिवर्सिटी उदयपुर के कुल प्रमुख एवं कुलाधिपति प्रोफेसर भंवरलाल गुर्जर ने की। विशिष्ट अतिथियों में शिक्षाविद् डॉ. कुलदीप सिंह, पूर्व अतिरिक्त जिला कलक्टर रामसुख गुर्जर, भाजपा नेता डॉ. विक्रम सिंह गुर्जर, पीसांगन प्रधान शिवराज गुर्जर, जीकेपी प्रदेश उपाध्यक्ष पीडी गुर्जर झुंझुनूं, सीएमएचओ डॉ. रामकेश मीणा, डिप्टी राजेंद्र मीणा, डॉ. सुरेंद्र सिंह मेरठ, लक्ष्मीलाल गुर्जर मावली, अखिल भारतीय युवा गुर्जर महासभा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष गोपेन्द्र सिंह पावटा, निकिता ग्रुप अहमदाबाद के चेयरमैन बंटी गुर्जर, डॉ. देवेंद्र खटाना, सांवरिया सेठ प्रॉपर्टीज के चेयरमैन रामौतार गुर्जर, थानाधिकारी वीर सिंह गुर्जर,

श्रीराम फागना और नाथूसिंह गुर्जर शामिल रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों ने भगवान जगदीश, भगवान देवनारायण और मां सरस्वती की प्रतिमाओं के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया। समारोह स्व. हरिसिंह महुवा (पूर्व मुख्य सचेतक, राजस्थान सरकार) को समर्पित था। सभी अतिथियों का स्वागत श्री जगदीश मंदिर ट्रस्ट समिति, बारह गांव खटाना के पंच पटेल, कार्यक्रम संयोजक सियाराम वकील एवं समिति सदस्य सुरेंद्र खटाना ने किया। प्रतिभाओं को सम्मान पत्र, स्मृति चिन्ह, दुपट्टा और भगवान जगदीश की तस्वीर भेटकर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि गोपीचंद गुर्जर ने कहा कि समाज के विकास के लिए शिक्षा सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि बालिकाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि महिला शिक्षा से ही समाज में प्रगति और स्थायित्व संभव है।

अध्यक्ष प्रोफेसर भंवरलाल गुर्जर ने कहा कि उच्च शिक्षा से समाज की सोच बदलती है और बालिकाओं को शिक्षित बनाना समाज उत्थान का पहला कदम हैं। अन्य वक्ताओं ने कहा कि समाज के होनहार विद्यार्थियों को सम्मानित कर उन्हें प्रेरित किया जा सकता है। इससे वे अपने भविष्य के प्रति सजग होकर माता-पिता के सपनों को साकार करने में सक्षम बनेंगे। वक्ताओं ने युवाओं से लक्ष्य निर्धारित कर निरंतर प्रयास करते रहने का आह्वान किया।

कार्यक्रम के अंत में जगदीश धाम देववाणी पत्रिका के संपादक एवं संयोजक सियाराम वकील ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

समारोह में नवचयनित आरएएस ध्रुव गुर्जर, ऋतु कांदील, रीना बैंसला, राकेश खटाना, सचिन पोसवाल, सौरभ बैंसला, असिस्टेंट प्रोफेसर मोनिका माल, जगदीश गोचर, विक्रम सिंह, योगेंद्र गुर्जर, राष्ट्रीय कवि जगदीश खटाना, डॉ. राधेश्याम मावई, योगेश पाराशर, एडवोकेट जगमोहन गुर्जर, कप्तान सिंह, डॉ. दिनेश बैंसला, घनश्याम खटाना, पूर्व एएसपी परमाल सिंह खटाना, पीसीसी सदस्य शीशराम खटाना, पूर्व जिला प्रमुख गीता गुर्जर, रूपसिंह खटाना, कैप्टन शीशराम खटाना (सेना मेडल), जीकेपी ब्लॉक अध्यक्ष श्यामसुंदर पावटा, जेबी पूर्वांचल स्कूल हिण्डौन सिटी के निदेशक राकेश खटाना, इंजीनियर राजेंद्र खटाना, डॉ. भूर सिंह फागना, धर्मराज गुर्जर, जितेंद्र रैकवाल, अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग क्रिकेटर रणजीत खटाना, रामनरेश खटाना, भूर सिंह घाटरा, विक्रम कटारा, भूपेंद्र खटाना, सुग्रीव हरसाना, श्रीराम खटाना, जेलर सचिन कसाना, सुरेंद्र पावटा, कैप्टन लाखन सिंह, मुकेश खटाना, राजेश बोटू, सेवाराम गुर्जर, साहब सिंह व्याख्याता और हंसराज व्याख्याता सहित बड़ी संख्या में समाजबंधु उपस्थित रहे।

महत्त्वपूर्ण सूचना : शुगर (मधुमेह) रोगियों के लिए

शुगर (मधुमेह) रोगियों हेतु महत्त्वपूर्ण सूचना है- मधुमेह रोगियों के कितना भी भारी शुगर हो, कृपया शुगर की मरीज हमसे सम्पर्क करें, हमारी दवा दिन में एक बार लेनी है और जिनको 275 से अधिक शुगर बढ़ा हुआ है उनको एक महीने तक सात दिन में दो बार लेनी है। एक महीने के बाद फिर 7 दिन में एक बार लेनी है। यह दवाई सम्पूर्ण जैन विधि से बनाई जाती है और जैन साधु भगवन्त भी हमारी दवा ले सकते हैं। इस दवाई का कोई साइड इफेक्ट नहीं हैं। इस दवा से शुगर के आड़ असर कम हो जाते हैं। इससे एलोपेथी दवा बंद हो जाती है, इन्सुलिन लेना भी बंद हो जाता है, कोई भी जख्म हो जल्दी ठीक हो जाते हैं। जैन साधु भगवंतों का कोई भी समुदाय हो नि:शुल्क दी जाती है। सम्पर्क करें : 9869145453

- गिरीश कुमार रतन चंदजी जैन (तखतगढ़ वाले), मुम्बई

मानव सेवा सबसे बड़ी सेवा है और
साधर्मिक भक्ति से बड़ी कोई भक्ति नहीं।

महर्षि वाग्भट्ट द्वारा प्रणीत अष्टाङ्ग हृदयम में हृदयाघात से बचाव के सूत्र

हार्ट अटैक : भारत में 3000 साल पहले एक बहुत बड़े ऋषि हुये थे- जिनका नाम था महाऋषि वाग्भट्ट। उन्होंने एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम है, अष्टांग हृदयम। इस पुस्तक में उन्होंने बीमारियों को ठीक करने के लिए 7,000 सूत्र लिखे थे। यह उनमें से ही एक सूत्र है। महर्षि वाग्भट्ट लिखते हैं कि कभी भी हृदय को घात हो रहा है मतलब दिल की नलियों में ब्लॉकेज होना शुरू हो रहा है तो इसका मतलब है कि रक्त में (एसिडिटी) अम्लता बढ़ी हुई है। अम्लता आप समझते हैं, जिसको अंग्रेजी में कहते हैं acidity अम्लता दो तरह की होती है- एक होती है पेट की अम्लता और एक होती है रक्त की अम्लता। आपके पेट में अम्लता जब बढ़ती है तो आप कहेंगे पेट में जलन सी हो रही है, खट्टी-खट्टी डकार आ रही हैं, मुंह से पानी निकल रहा है और अगर ये अम्लता acidity और बढ़ जाये तो hyperacidity होगी और यही पेट की अम्लता बढ़ते-बढ़ते जब रक्त में आती है तो रक्त अम्लता blood acidity होती है और जब blood में acidity बढ़ती है तो ये अम्लीय रक्त दिल की नलियों में से निकल नहीं पाती और नलियों में ब्लॉकेज कर देता है तभी हार्ट अटैक होता है इसके बिना हार्ट अटैक नहीं होता और ये आयुर्वेद का सबसे बड़ा सच है जिसको कोई डाक्टर आपको बताता नहीं क्योंकि इसका इलाज सबसे सरल है। इलाज क्या है? महर्षि वाग्भट्ट लिखते हैं कि जब रक्त में अम्लता (acidity) बढ़ गई है तो आप ऐसी चीजों का उपयोग करो जो क्षारीय हैं। आप जानते हैं दो तरह की चीजें होती हैं अम्लीय और क्षारीय। acidic and alkaline अब अम्ल (acid) और क्षार (alkaline) को मिला दो तो क्या होता है? neutral होता है सब जानते हैं तो महर्षि वाग्भट्टलिखते हैं कि रक्त की अम्लता बढ़ी हुई है तो क्षारीय (alkaline) चीजें खाओ। तो रक्त की अम्लता (acidity) neutral हो जाएगी! और रक्त में अम्लता neutral हो गई! तो heart attack की जिंदगी में कभी संभावना ही नहीं।

अब आप पूछेंगे कि ऐसी कौन सी चीजें हैं जो क्षारीय हैं और हम खायें? आपके रसोई घर में ऐसी बहुत सी चीजें है जो क्षारीय हैं जिन्हें आप खायें तो कभी हार्ट अटैक न आए और अगर आ गया है तो दुबारा न आए। यह हम सब जानते हैं कि सबसे ज्यादा क्षारीय चीज क्या है और सब घर में आसानी से उपलब्ध रहती हैं, तो वह है लौकी जिसे दुधी भी कहते हैं। जिसे आप सब्जी के रूप में खाते हैं। इससे ज्यादा कोई क्षारीय चीज ही नहीं है। तो आप रोज लौकी का रस निकाल-निकाल कर पियो या कच्ची लौकी खायो। महर्षि वाग्भट्ट कहते हैं- रक्त की अम्लता कम करने की सबसे ज्यादा ताकत लौकी में ही है तो आप लौकी के रस का सेवन करें, कितना सेवन करें? रोज 200 से 300 मिलीग्राम पियो, कब पियें? सुबह खाली पेट (टॉयलेट जाने के बाद) पी सकते हैं या नाश्ते के आधे घंटे के बाद पी सकते हैं। इस लौकी के रस को आप और ज्यादा क्षारीय बना सकते हैं। इसमें 7 से 10 पत्ते तुलसी के डाल लो, तुलसी बहुत क्षारीय है। इसके साथ आप पुदीने के 7 से 10 पत्ते मिला सकते हैं। पुदीना भी बहुत क्षारीय है, इसके साथ आप काला नमक या सेंधा नमक जरूर डालें। ये भी बहुत क्षारीय है लेकिन याद रखें नमक काला या सेंधा ही डालें वो दूसरा आयोडीन युक्त नमक कभी न डालें। ये आयोडीन युक्त नमक अम्लीय है तो आप इस लौकी के जूस का सेवन जरूर करें। 2 से 3 महीने की अवधि में आपकी सारी हृदय सम्बन्धी ब्लॉकेज को ठीक कर देगा। 21वें दिन ही आपको बहुत ज्यादा असर दिखना शुरू हो जाएगा। कोई ऑपरेशन की आपको जरूरत नहीं पड़ेगी। घर में ही हमारे भारत के आयुर्वेद से इसका इलाज हो जाएगा और आपका अनमोल शरीर और लाखों रुपए आपरेशन के बच जाएँगे।

अनुत्तरित प्रश्न : भारत सरकार एवं राज्य सरकार आखिर गुर्जरों के साथ न्याय क्यों नहीं कर रही है ?

गुर्जरों को नवीं अनुसूची में शामिल करने के मुद्दे पर गुर्जर संगठन बार-बार आंदोलन करते रहे हैं। समझौते होते हैं उनकी क्रियान्विति नहीं होती जिसके चलते संगठनों को पुन: आन्दोलन की चेतावनी देनी पड़ती है। राजस्थान में तीन बार गुर्जरों को दिया गया आरक्षण खत्म किया जा चुका है। फरवरी 2019 में चौथी बार आरक्षण दिया गया। वर्तमान में राजस्थान में 64% आरक्षण दिया जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा जहां भी 50% सीमा से ऊपर आरक्षण दिया गया, उसे नवीं अनुसूची में सम्मिलित करवाने की बात कही है, परन्तु राजस्थान सरकार उसे नंवी अनुसूची में सम्मिलित नहीं करवा पाई है। यह हमारे यहां की राज्य सरकार, केंद्र सरकार, संविधान और न्याय व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न है ? सके लिए गुर्जरों को आंदोलन की जरूरत क्यों ?

सरकार और संविधान स्वयं समस्या का समाधान करें। गुर्जर आरक्षण आंदोलन के पन्नों में गुर्जर आरक्षण आंदोलन के कारण हुई जान माल की क्षति का रिकार्ड दर्ज है- फिर भारतीय न्याय व्यवस्था की कसौटी क्या है ?

मुझे स्मरण आ रहा है 1980 में मेरे एक अधिकारी मित्र परस्पर चर्चा में कहा करते थे, बात-बात में आंदोलन क्यों ? मेरा उन्हें उत्तर था न्याय प्राप्ति के लिए। इस पर वे कहने लगे देश की राजनीतिक, न्यायिक व्यवस्था में न्याय को विलंबित तो किया जा सकता है पर पाया नहीं जा सकता है। न्याय प्राप्त करना तो बहुत दूर की बात है न्याय के द्वार तक पहुंचना भी साधारण व्यक्ति के लिए मुश्किल है।

राजस्थान प्रदेश में वर्ष 2003 से प्रारंभ आरक्षण आंदोलन एवं स्वतंत्रता के साथ ही भारतीय सेना में गुर्जर रेजिमेंट स्थापना की मांग देशभर का गुर्जर समाज सरकारों से करता आया है। सरकार चाहे कांग्रेस की हो या भाजपा की, सभी राजनीति के दर्पण में गुर्जरों के राजनीतिक अस्तित्त्व आधार से उन्हें समय-समय पर परिचित करवाते रहे हैं। चाहे वह राजेश पायलट के कार्यकाल मैं कांग्रेस के नेतृत्व का प्रश्न हो अथवा सचिन पायलट का, या रामचंद्र विकल जैसे दिग्गज नेताओं का। राजस्थान में गुर्जरों ने आपातकाल में समाज सुधार के माध्यम से अपनी एकता का परिचय दिया है वही श्री देवनारायण के नाम पर, पूरे देश के गुर्जर समाज को संगठित करने की पहल की है जिसकी परिणति राजस्थान में गुर्जर आरक्षण आंदोलन रहा है।

सरदार सरोवर पर खड़ी सरदार पटेल की प्रतिमा देश के वंचित वर्ग को उसकी ऊंचाई का बोध करवा रही प्रतीत होती है। वह कह रही है 'चेत सके तो चेत'। विमुक्त घुमंतू, अर्ध घुमंतू जनजातियों एवं पिछड़े ग्रामीण मजदूर किसानों को तब तक न्याय नहीं मिलेगा जब तक वें देश में अपने राजनीतिक अस्तित्व के प्रति सचेत नहीं होंगे। सरदार पटेल ही थे जिन्होंने अंग्रेजों द्वारा लागू आरक्षण में संशोधन करके अनुसूचित जनजाति को आरक्षण उनकी जनसंख्या के अनुपात में 8% से बढ़ाकर 12% करवाया था। सरदार पटेल ने 1952 में अपराधी जनजाति कानून को हटवाया इनकी संख्या के अनुपात में 32% आरक्षण दिया सरदार पटेल की मृत्यु के पश्चात काका कालेलकर पिछड़ा आयोग, ढेंबर आयोग, जनजाति आयोग, बी.एन. लोकोर कमेटी, दुर्गाबाई देशमुख कमेटी, मंडल कमेटी, संविधान समीक्षा आयोग, महाश्वेता देवी विंमुक्त जनजाति रपट, डीएनटी कमीशन और अब रोहिणी आयोग की रिपोर्ट भी विचाराधीन है। जबकि सभी आयोगों ने सरदार पटेल द्वारा विमुक्त जनजातियों को दिए आरक्षण को उचित माना है। देश का गुर्जर भी इस सूची में सम्मिलित है। गुर्जर कहीं अनुसूचित जनजाति अन्य पिछड़ा वर्ग विशेष पिछड़ा वर्ग में सरकार द्वारा आधा अधूरा आरक्षण के नाम पर राज्य, केंद्र सरकार और न्यायालय का वंचित वर्ग के साथ 'तू डाल डाल मैं पात पात' का खेल तब तक चलेगा जब तक वंचित वर्ग अपने अस्तित्व के प्रति जागेगा नहीं।

अब समय आ गया है हम अपने पूर्वजों के गौरव को स्मरण करते हुए हुंकार भरें और आगे बढ़ें।

मेरी भावयात्रा... हिंदी भाषा हमारी राष्ट्रीय चेतना की आत्मा

हिंदी दिवस पर विशेष : भारत की पहचान उसकी विविधता में निहित है- भाषाओं, संस्कृतियों, परंपराओं और जीवनशैली की अनगिनत धाराएँ यहाँ एक साथ बहती हैं। इस विराट देश को जोड़ने वाला सूत्र केवल राजनीतिक सीमाओं या प्रशासनिक व्यवस्थाओं से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक आत्मा से आता है। इस आत्मा का सबसे सशक्त और सजीव प्रतीक हमारी हिंदी भाषा है। हिंदी केवल एक बोलचाल का माध्यम नहीं, बल्कि भारत की आत्मा, उसकी सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रीय एकता का जीवंत सेतु है।

आज, जब हम तकनीकी प्रगति के युग में प्रवेश कर चुके हैं, संचार के साधन अत्यंत उन्नत हो चुके हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और इंटरनेट ने दुनिया को गाँव में बदल दिया है। ऐसी स्थिति में भाषा को लेकर पुराने अवरोध अब लगभग मिट गए हैं। किसी भी भारतीय या विदेशी भाषा में काम करना अब मुश्किल नहीं रहा। अनुवाद उपकरणों और विभिन्न एप्स की मदद से आज हम क्षणों में किसी भी भाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। फिर भी, यह तथ्य अपरिवर्तनीय है कि किसी राष्ट्र की आत्मा उसकी अपनी भाषा में ही सजीव और प्रभावी ढंग से प्रकट होती है।

भारतीय भाषाओं के विशाल परिवार में हिंदी का स्थान विशेष है। संस्कृत से उपजी अधिकांश भारतीय भाषाएँ एक ही कुल से संबंधित हैं। यही कारण है कि हिंदी भारतीय भाषाई परिवार के हृदय में स्थित होकर सहज रूप से सबको जोड़ती है। उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम तक, हिंदी का एक साझा आधार आज भी हमें आपसी संवाद का स्वाभाविक माध्यम प्रदान करता है। देश के अधिकांश भूभाग में हिंदी को न केवल समझा जाता है, बल्कि दिल से अपनाया भी गया है। यह भारतीय जनमानस की धड़कनों को सबसे निकट से व्यक्त करने वाली भाषा है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब संविधान निर्माताओं ने देश की साझा भाषा का विचार किया, तो हिंदी को राजभाषा का गौरव प्रदान किया गया। यह निर्णय मात्र राजनीतिक नहीं था; यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर का सम्मान था। हिंदी ने पिछले सात दशकों में प्रशासन, शिक्षा, विज्ञान, साहित्य और तकनीकी क्षेत्रों में अद्भुत विकास किया है। आज हिंदी न केवल सरकारी कामकाज की सशक्त भाषा है, बल्कि विश्व पटल पर भी अपनी अलग पहचान बना रही है। संयुक्त राष्ट्र से लेकर विश्व के अनेक देशों में हिंदी बोलने और समझने वाले लोगों की संख्या निरंतर बढ़ रही है।

हिंदी का सबसे बड़ा सामर्थ्य इसकी सरलता और सहजता में निहित है। यह न केवल उत्तर भारत के ग्रामों-शहरों में, बल्कि देश के उन कोनों तक भी अपनी गूँज पहुँचा रही है जहाँ स्थानीय भाषाएँ सजीव हैं। यह अपने आप में अद्भुत है कि अलग-अलग मातृभाषाएँ बोलने वाले लोग आपसी संवाद के लिए स्वाभाविक रूप से हिंदी को अपनाते हैं। यह कोई थोपी गई प्रक्रिया नहीं, बल्कि हृदय से उपजी सहज स्वीकार्यता है। यही हिंदी की असली शक्ति है।

आज जब तकनीकी युग ने अनगिनत भाषाओं के प्रयोग को सरल बना दिया है, तब भी यह आवश्यक है कि हम अपनी साझा संस्कृति और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए हिंदी को व्यवहार की मुख्य भाषा बनाएँ। अंग्रेजी का प्रयोग ज्ञान-विज्ञान की अंतरराष्ट्रीय आवश्यकता के लिए स्वाभाविक है, किंतु हमारे आपसी सामाजिक, सांस्कृतिक और राजकीय व्यवहार के लिए हिंदी से बेहतर विकल्प कोई नहीं। किसी भी राष्ट्र की प्रगति तभी सार्थक होती है जब उसकी जड़ें अपनी मातृभूमि की भाषा और संस्कृति से गहराई से जुड़ी हों।

हिंदी दिवस केवल औपचारिक उत्सव नहीं, बल्कि आत्मचिंतन का अवसर है। यह हमें यह सोचने पर विवश करता है कि क्या हम अपनी भाषा के साथ न्याय कर पा रहे हैं? क्या हम अपनी भावनाओं, विचारों और भारतीय संस्कृति की गहराइयों को अपनी ही भाषा में उतनी निष्ठा से व्यक्त कर पा रहे हैं, जितनी आवश्यकता है? हिंदी को बढ़ावा देना केवल सरकार या संस्थानों का कार्य नहीं, यह हम सभी नागरिकों का दायित्व है। प्रत्येक परिवार, विद्यालय, महाविद्यालय और समाज को यह संकल्प लेना चाहिए कि वे हिंदी को न केवल बोलचाल में, बल्कि रचनात्मक लेखन, विज्ञान, तकनीकी और व्यावसायिक कार्यों में भी अपनाएँ।

हिंदी दिवस का संदेश यही है कि हम आधुनिकता को अपनाते हुए भी अपनी जड़ों को न भूलें। तकनीकी विकास ने

हमें अनेक भाषाओं तक पहुँचने का अवसर दिया है, किंतु हमारी आत्मा की सच्ची अभिव्यक्ति हिंदी में ही संभव है। यह भाषा हमारी संस्कृति, सामाजिक संरचना और राजकीय व्यवस्था को एकसूत्र में बाँधने का अद्वितीय सामर्थ्य रखती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हिंदी को केवल उत्सवों और औपचारिक भाषणों तक सीमित न रखकर अपने जीवन का स्वाभाविक अंग बनाएँ। यही हमारी राष्ट्रीय चेतना को सशक्त करेगा और हमें अपनी समृद्ध परंपरा तथा उज्ज्वल भविष्य से गहराई से जोड़े रखेगा। यही हिंदी के प्रति हमारा सच्चा सम्मान और भारतीयता का वास्तविक उत्सव होगा।

– ***दीपक पण्ड्या,***
पूर्व राजभाषा अधिकारी, बीएसएनएल,
राजकोट व हिंदीसेवी

प्रो. अंबादान रोहड़िया के चिंतन में चारणत्व की चारु चमक

पद्मश्री सूर्यदेवसिंह बारहठ

भारतीय संस्कृति की विराट परंपरा में वाणी और वीरता का एक अनूठा संगम देखने को मिलता है। यह संगम चारण परंपरा के रूप में हमारे इतिहास, काव्य और लोकस्मृति में अंकित है। चारण केवल कवि नहीं, वे संस्कृति के प्रहरी और नैतिकता के संदेशवाहक रहे हैं। उन्होंने शब्द को शस्त्र बनाया और सत्य को श्रृंगार। राजस्थान और गुजरात की धरती पर यह परंपरा शौर्य, श्रद्धा, नीति और लाके निष्ठा की प्रतीक रही है। इस परंपरा की जड़ें इतनी गहरी हैं कि वह आज भी संस्कृति की नाड़ी के रूप में धड़कती हैं।

इसी धारा के आधुनिक व्याख्याकार और सृजनशील मनीषी हैं– प्रोफेसर अंबादान रोहड़िया, जो न केवल गुजराती भाषा के प्रख्यात अध्येता हैं, बल्कि चारणी साहित्य और संस्कृति के विचार-संवर्द्धक भी हैं। उन्होंने परंपरा को संग्रहालय में बंद नहीं रहने दिया, बल्कि उसे आधुनिक चिंतन के जीवंत संवाद में रूपांतरित किया। उनका विचार-संसार यह बताता है कि चारणत्व केवल वंश की परंपरा नहीं, बल्कि जीवन-मूल्यों की साधना है, जो शब्द में संयम, कर्म में मर्यादा और विचार में शुचिता का संदेश देती है। परंपरा की ज्योति और चिंतन का आलोक उनके जीवन एवं सृजन का अहम हिस्सा है।

वस्तुत: 'चारणत्व कोई जातीय संबोधन नहीं, यह एक सांस्कृतिक दृष्टि है, जिसमें शब्द की शुचिता, भाव की निष्ठा और कर्म की सत्यता एकाकार होती है।' प्रो. रोहड़िया भी अपने साहित्य में इस परंपरा को केवल प्रशस्ति या वीरगाथा के कवित्व तक सीमित नहीं मानते, बल्कि इसे नैतिक जीवन-दर्शन के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके चिंतन में चारणत्व एक ऐसी मानवीय साधना है जिसमें सत्य, श्रद्धा, साहस और शब्द-संस्कार का अद्भुत समन्वय है। चारण कवियों ने केवल वीरता का गुणगान नहीं किया, उन्होंने समाज में नीति, धर्म आरै आत्मसंयम के आदर्शों को भी प्रतिष्ठित किया। यही दृष्टि प्रो. रोहड़िया के विचारों में प्रतिध्वनित होती है कि चारणत्व की असली पहचान मानवता के प्रति जिम्मेदारी में है।

प्रो. रोहड़िया के लेखन का एक विशिष्ट गुण यह है कि उसमें कोमलता और कठोरता का अद्भुत संतुलन है। यह संतुलन ही उनके चिंतन की 'चारु चमक' है। उनकी भाषा अकादमिक होते हुए भी भावसिक्त है; उनकी शैली में शोध की गंभीरता के साथ साहित्य की लय भी विद्यमान है। वे चारणत्व की व्याख्या करते हुए उसे मानव-संवेदना के सौंदर्यशास्त्र से जोड़ देते हैं। उनके लिए चारणत्व केवल शक्ति का प्रतीक नहीं, बल्कि संवेदनशील साहस का भी परिचायक है। चारणत्व का शौर्य करुणा से ही दीप्त होता है; वह वाणी तभी प्रेरक बनती है जब उसमे ं हृदय की ऊष्मा हो। इस प्रकार, उनके चिंतन में चारणत्व कोई शुष्क नीति नहीं, बल्कि एक जीवंत नैतिक सौंदर्य है, जो व्यक्ति और समाज दोनों को आलोकित करता है।

प्रो. अंबादान रोहड़िया का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान यह है कि उन्होंने परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु निर्मित किया। जहाँ अधिकांश आलोचक चारणी काव्य को इतिहास की वस्तु मानकर बीते समय में कैद कर देते हैं, वहीं प्रो. रोहड़िया उसे वर्तमान की सामाजिक चेतना में जीवित रूप में देखते हैं। उनका दृष्टिकोण यह है कि परंपरा का अर्थ जड़ता नहीं होता। परंपरा वह है जो वर्तमान मे ं दिशा और विवेक प्रदान करे। वे चारणी साहित्य को आधुनिक मूल्यो ं से जोड़ते हुए बताते हैं कि 'चारणत्व का असली अर्थ है– सत्य को शब्द देना और शब्द को संस्कार देना।'

उनकी दृष्टि में आधुनिक समय में चारणत्व की आवश्यकता और भी बढ़ गई है, क्योंकि आज समाज को नैतिक विवेक और सांस्कृतिक आत्मा की खोज है। इसलिए वे चारणत्व को आज के युग का संस्कार-दर्शन कहते हैं। उनके चिंतन में चारणत्व के चार मूल स्तंभ स्पष्ट रूप से उभरते हैं-

1. सत्य का आग्रह : चारणत्व का प्राणतत्व,
2. शौर्य की प्रेरणा : कर्म में वीरता
3. श्रद्धा की मर्यादा : आदर्श के प्रति निष्ठा
4. शब्द की साधना : वाणी की तपस्या

चारणत्व की पहली पहचान सत्य है। चारणी कवि राजा की भी आलोचना कर सकता था, यदि वह अन्याय करता। प्रो. रोहड़िया इस परंपरा को आज के बौद्धिक जीवन में भी लागू करते हैं। उनका मानना है कि विद्वान या लेखक का पहला धर्म सत्य के प्रति निष्ठा है, भले ही वह असुविधाजनक क्यों न हो। चारणत्व में शौर्य का अर्थ केवल युद्ध की वीरता नहीं, बल्कि विचार की निडरता भी है। प्रो. रोहड़िया कहते हैं कि चारणत्व की असली परीक्षा तब होती है जब शब्द सत्ता के सामने भी सत्य बोलने का साहस रखता है। वे इस शौर्य को 'सांस्कृतिक साहस' कहते हैं, जो व्यक्ति को नैतिक दृढ़ता प्रदान करता है।

चारणत्व में श्रद्धा वह शक्ति है जो वाणी को मर्यादित और अर्थपूर्ण बनाती है। रोहड़िया के अनुसार श्रद्धा केवल पूजा का भाव नहीं, बल्कि कर्तव्य के प्रति समर्पण है। वे गुरु, संस्कृति और मातृभूमि के प्रति श्रद्धा को चारणत्व का आवश्यक घटक मानते हैं। चारणत्व का अंतिम तत्व है 'शब्द का संयम'। चारण कवि के लिए शब्द साक्षात देवता हैं और प्रो. रोहड़िया ने इस शब्द-संस्कार को अपने जीवन का धर्म बनाया है। उनकी वाणी से निसृत शब्द न केवल सूचना देते हैं, बल्कि प्रेरणा और परिष्कार का स्रोत बनते हैं।

प्रो. अंबादान रोहड़िया ने गुजराती और राजस्थानी चारणी साहित्य का एक नया पाठ प्रस्तुत किया। उन्होंने इसे केवल 'राजाओं की प्रशस्ति' कहकर खारिज करने वाली दृष्टि का खंडन किया। उनके अनुसार चारणी कवि दरबारी नहीं, बल्कि संस्कृति के प्रहरी थे। वे सूजा बीठू, हिंगलाजदान कविया, ईसरदास बारहठ, आसानंद बारहठ, कविया करणीदान, आणंद-करमाणंद मीसण, हरदास मीसण, सायां झूला जैसे अनगिन चारण कवियों की व्याख्या करते हुए यह सिद्ध करते हैं कि इनकी वाणी में केवल प्रशंसा नहीं, बल्कि नैतिक प्रतिरोध और सामाजिक चेतना विद्यमान रही है। वे कहते हैं कि इन कवियों ने शब्द से तलवार का काम लिया- अन्याय के विरुद्ध और धर्म की रक्षा के लिए। उनकी आलोचनात्मक दृष्टि यह स्पष्ट करती है कि चारणी साहित्य को लाके -मूल्यों के ग्रंथालय की तरह पढ़ा जाना चाहिए। इसमें इतिहास, नीति, मनोविज्ञान और लोकसंस्कृति-सभी के सूत्र अंतर्निहित हैं।

प्रो. रोहड़िया चारणत्व को केवल साहित्यिक या जातीय विषय नहीं मानते, बल्कि सांस्कृतिक विमर्श के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वे मानते हैं कि चारणत्व भारत की उस सांस्कृतिक आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ वाणी धर्म से जुड़ती है और धर्म मानवता से। उनके अनुसार चारणत्व का मर्म यह है कि समाज में सत्य, निष्ठा और न्याय की प्रतिष्ठा हो। चारणत्व तब तक जीवित है जब तक समाज में शब्द के प्रति आस्था और कर्म के प्रति श्रद्धा है। ऐसे विचार डॉ. अंबादानजी को केवल चारणी परंपरा का अध्येता नहीं, बल्कि उसका आधुनिक प्रवक्ता सिद्ध करते हैं।

'चारु चमक'- यह शीर्षक अपने आप में प्रतीक है। 'चारु' अर्थात सुंदर, सौम्य, सुसंयमित; और 'चमक' अर्थात तेज, ओज, प्रकाश। प्रो. रोहड़िया के चिंतन में ये दोनों तत्व एक साथ प्रकट होते हैं- उनकी भाषा में चारुता है, और उनके विचारों में चमक। उनकी वाणी में गुजरात की गंभीरता है तो राजस्थान की रागात्मकता भी। वे लिखते हैं तो भाषा में तर्क की दृढ़ता होती है, बोलते हैं तो भाव में करुणा। यह द्वंद्वहीन संतुलन ही उनकी विशिष्टता है। चारणत्व की इस 'चारु चमक' को उन्होंने आधुनिक युग के मूल्यविचार में रूपांतरित किया, जहाँ शब्द की शक्ति, संस्कृति की चेतना और समाज की आत्मा एकाकार होती है।

प्रो.रोहड़िया का चारणत्व केवल सांस्कृतिक विमर्श नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आत्मबोध का भी प्रतीक है। वे चारण कवियों की परम्परा में देशभक्ति, नीति आरै मानवता के भाव को आधुनिक संदर्भ में पुनर्स्थापित करते हैं। उनके विचार में चारणत्व वह आदर्श है जो व्यक्ति को केवल अपने कुल का नहीं, बल्कि राष्ट्र का चारण बनाता है, जो शब्द से समाज को सजग करे, और कर्म से संस्कृति को संरक्षित रखे। वे मानते हैं कि आज के शिक्षण और साहित्य में चारणत्व की पुनर्स्मृति आवश्यक है, क्योंकि यह व्यक्ति में सत्य के प्रति अडिगता और समाज के प्रति दायित्वबोध जगाता है। उनका चारणत्व किसी एक

जाति की पहचान नहीं, बल्कि राष्ट्र की नैतिक ऊर्जा है।

प्रो. अंबादान रोहड़िया के चिंतन में चारणत्व कोई बीती कहानी नहीं, बल्कि वर्तमान का मार्गदर्शन है। उन्होंने अपने अध्ययनों और लेखनों से यह सिद्ध किया कि चारणत्व की आत्मा आज भी जीवित है। जब भी कोई व्यक्ति सत्य बोलने का साहस करता है, जब कोई शब्द समाज में विवेक जगाता है, जब कोई कर्म संस्कृति की रक्षा करता है, मानो वह चारण बोल रहा है। उनकी दृष्टि में चारणत्व भारतीय संस्कृति का नैतिक मेरुदंड है। वाणी में जब तक संयम रहेगा, साहित्य में जब तक सत्य रहेगा, और समाज में जब तक श्रद्धा रहेगी, तब तक चारणत्व की यह 'चारु चमक' हमारे सांस्कृतिक आकाश को आलोकित करती रहेगी। आपका संपूर्ण जीवन और चिंतन यह संदेश देता है कि 'चारणत्व केवल इतिहास नहीं वरन यह आत्मा का आलोक है।'

सार रूप में मेरा मानना है कि प्रो. रोहड़िया का जीवन एवं सृजन हमारी भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा का प्रत्यक्ष पुंज है। मौलिक लेखन, संपादन, अनुवाद एवं अन्य विविध क्षेत्रों में आपकी रचनात्मक प्रतिभा जिस रूप में प्रस्तुत हुई है, वह अनुकरणीय है। आपका साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवदान स्तुत्य है। आपकी प्रतिभा पर बारम्बार प्रमुदित होती मेरी कलम से सहज ही निसृत अग्रांकित दस-दोहे प्रस्तुत कर आपके अनन्त यश की कामना करता हूँ-

रजनि गता अम्बर रता, साहित-सरजक भान।
जग जाना माना महत, रोहड़ अम्बादान।। 01।।

दूर-दूर दीखे नहीं, तुम सा और सुजान।
गुजराती में ज्ञान की, गागर अम्बादान।। 02।।

अध्यापक उपकुलपति, पद पाए पहचान।
चारण आज समाज में, और न अम्बादान।। 03।।

लिखना पढ़ना बोलना, घर-घर राजस्थान।
तू भी किसि से कम नहीं, भाई अम्बादान।। 04।।

मान बहुत अभिमान नहिं, करे न आप बखान।
कल-कल निरमल गंगजल, पावन अम्बादान।। 05।।

वीणावादिनि के वरद, विश्रुत सुत विद्वान।
पूरित-प्रेम पठान के, पंडित अम्बादान।। 06।।

पूर्वज ज्ञान प्रकाश तें, वर्तमान धनवान।
बंध-बक्स से मुक्त कर, लाया अम्बादान।। 07।।

संस्कृति-विकृति रोकने, करने को उत्थान।
प्राण-प्रण संकल्प ले, जुट गए अम्बादान।। 08।।

भूले-बिसरे रचयिता, ज्ञानी गुणी महान।
चारण-साहित शोध कर, लिखिया अम्बादान।। 09।।

कर जोडे. अनुनय विनय, वर देवो भगवान।
कृतियां स्मृतियां रहें, सदियों अम्बादान।। 10।।

इति शुभम्!

किशनगढ़ बास, अलवर (राजस्थान)
संपर्क : 9414020047

आत्मिक सौंदर्य में ही मन का सुख

मध्य प्रांत में किसी समय एक राजा राज्य करता था। वह दरबार में आने वाले आगंतुकों से अपनी राजसभा की कोई कमी बताने का आग्रह करता। हालांकि किसी ने कभी कोई कमी नहीं बताई। एक दिन किसी अन्य राज्य का चारण वहां आया। राजा ने उससे भी वही प्रश्न पूछा। चारण ने राजसभा पर एक सूक्ष्म निगाह डाली और कहा, आपकी राजसभा अत्यंत सुंदर है, किंतु इसमें एक चित्रशाला की कमी है। राजा ने तत्काल अपने कारीगरों को चित्रशाला बनाने का आदेश दिया। दक्ष कारीगरों ने जल्दी ही एक मनमोहक चित्रशाला तैयार कर दी। चित्रशाला के उद्घाटन समारोह के लिए स्थापित इंद्रध्वज ने चित्रशाला के सौंदर्य को द्विगुणित कर दिया। समारोह के बाद साज-सज्जा की सारी सामग्री भंगार में डाल दी गई। चित्रशाला की शोभा बढ़ाने वाली सामग्री धूल-मिट्टी पड़ने से असुंदर हो गई। एक दिन राजा की दृष्टि उस पर पड़ी। उनका भद्दा स्वरूप देखकर राजा ने चिंतन किया कि संसार में भीतरी सुंदरता कुछ नहीं है। उसकी सुंदरता दूसरी वस्तुओं पर आश्रित है। सारी चमक-दमक उधार की है। फिर ऐसी सुंदरता को जुटाने से क्या फायदा? मुझे वह सौंदर्य खोजना चाहिए जो अपना हो और वह तो अपने भीतर ही मिलेगा। वस्तुत: मुझे आत्मलीन होकर वास्तविक सौंदर्य को प्राप्त करना चाहिए। ऐसा विचार निश्चित कर राजा ने राजसुख त्याग दिया और आत्मसाधना के मार्ग पर चल पड़ा। उसने कड़ी तपस्या की और आत्मज्ञान पाया। सच्चा सौंदर्य आत्मिक होता है और वही स्थायी भी होता है। भौतिक सौंदर्य इंद्रिय सुख अवश्य देता है, किंतु मन का सुख आत्मिक सौंदर्य में ही बसता है।

साहस, स्वाभिमान एवं दृढ़शक्ति, कार्यकुशलता के धनी लौहपुरूष सरदार बने -अरोरा

उज्जैन। राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना द्वारा भारतीय ज्ञानपीठ माधवनगर में भारत के पूर्व गृहमंत्री भारतरत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल की150 वीं जयंती पर सरदार वल्लभ भाई पटेल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता लेखक, व्यंग्यकार डॉ. पिलकेन्द्र अरोरा ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना का धन्यवाद साधुवाद देता हूं कि उन्होंने सरदार वल्लभ भाई पटेल जिसके लिए आपने भारतीय ज्ञानपीठ से अच्छा कोई स्थान नहीं है, सरदार पटेल जी के पावन स्मृति को प्रणाम करता हूं। वल्लभ का अर्थ कृष्ण अर्थात् जिससे सब प्रेम करे, जो सबके आकर्षण का केन्द्र है । जब महात्मा गांधी का निधन हुआ उससे 2 माह बाद ही सरदार पटेल जी को पहला हार्ट अटेक आया था। वे दृढ़निश्चयी अपने इरादो में दृढ़ थे, उनके इसी साहस, स्वाभिमान दृढ़ कार्यकुशलता के कारण ही उनको लौहपुरूष कहा गया। आंदोलन में सफलता के दौरान महिलाओं द्वारा उन्हें सरदार शब्द से सम्बोधित किया था। तभी से पूरा देश सरदार पटेल बोलता आया है।

मुख्यअतिथि म.प्र. लेखक संघ जिलाध्यक्ष डॉ. हरिमोहन बुधौलिया ने उपस्थित श्रोताओं को लाख-सवा लाख से भी मूल्यवान बताया। राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना की राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनी है इसमें डॉ. प्रभु चौधरी जी के अथक परिश्रम का परिणाम बताया। सरदार वल्लभ भाई पटेल के अमूल्य चित्रों की प्रदर्शनी जिसमें उनके बचपन से लेकर आखिरी समय तक का चित्रण किया है इस प्रदर्शनी को 7 दिवस तक दर्शनीय रखना चाहिए। आपने कहा कि सब कुछ पूर्व निश्चित है। सरदार पटेल जी को आज उनकी गुणवत्ता के कारण याद किया जा रहा है।

समारोह के संयोजक डॉ. प्रभु चौधरी ने अपनी प्रस्तावना में बताया कि एकता दिवस पर देश की एकता एवं अखंडता के लिए सरदार पटेल के योगदान को हमेशा याद किया जाएगा हम सब लोग एकता समरसता के लिए एकत्रित होकर राष्ट्र को आगे बढ़ाएं। सरदार पटेल ने निडरता के साथ वह सभी काम किया जो आवश्यक थे भारत की आन बान और शान से राष्ट्र के सपूत पटेल देश के हित में अनेक महान कार्य किये है ऐसे महान व्यक्ति का देश सदैव ऋणी रहेगा।

विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार अरविन्द जैन ने कहा कि हमारा देश 531 रियासतों का देश पूर्व में था इस महापुरूष ने भारत को बचा लिया। दंगे नहीं होते तो पूरा पाकिस्तान हमारा होता। सरदार पटेल ने कहा था कि अगर विभाजन हो रहा है तो देश की जनसंख्या का भी बंटवारा होना चाहिये। जो जिस मजहब को पालने वाले उसी देश के नागरिक रहे। विनम्र शब्दों में सरदार पटेल और उनके प्रशंसको , अनुयायियों को नमन करता हूं।

राष्ट्रीय संरक्षक समारोह अध्यक्ष श्री ब्रजकिशोर शर्मा ने कहा कि सरदार पटेल की भूमिका सबको एक करने की थी। पटेल जी ने एकता का काम किया। अगर देश की आजादी के पहले अगर वह जिद पर अड़ जाते तो एक धब्बा लग जाता। लेकिन उन्होने ऐसा नहीं होने दिया। एकता वही है जहा आज हमे ऐसे सोचना चाहिए, हर व्यक्ति देश के लिए सोचते है और करते भी हैं। हमें अपने-अपने स्थान पर देश हित में कार्य करते रहना चाहिए।।

समारोह के पूर्व अतिथियों ने सरदार वल्लभ भाई पटेल

मेमोरियल सोसायटी की चित्र प्रदर्शनी का भारतीय ज्ञानपीठ के सद्भावना सभागृह में अवलोकन किया व सराहा।

समारोह के शुभारम्भ में अतिथियों ने माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलित किया एवं सरदार पटेल व श्री कुलश्रेष्ठ जी को सूत्र की माला पहनाई। अतिथियों का स्वागत एवं भाषण राष्ट्रीय संयुक्त सचिव सुंदरलाल मालवीय ने दिया। भारतीय ज्ञानपीठ महाविद्यालय में आयोजित समारोह में राष्ट्रीय संरक्षक श्री ब्रजकिशोर शर्मा को सरदार पटेल की 150वीं जयंती पर शाल एवं अभिनंदन पत्र, स्मृति चिन्ह प्रदान किया। साथ ही नवनियुक्त सहायक प्राध्यापक डॉ. श्यामलाल चौधरी को अतिथियों ने शाल पहनाकर सम्मानित किया। सरस्वती वंदना डॉ. शीला व्यास ने प्रस्तुत की एवं अतिथि परिचय डॉ. अंजना जैन ने दिया समारोह का सफल संचालन एवं आभार प्रदेश महासचिव रंजना पांचाल ने किया। – डॉ. हरीशकुमार सिंह

'भारत की एकता के महान शिल्पकार' 'लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल'

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ऐसे कई महान नेताओं का योगदान है, जिन्होंने देश के आत्म गौरव की प्राप्ति के लिए पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

इनमें प्रमुख हैं सरदार वल्लभभाई पटेल जो न केवल स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानी थे, बल्कि भारत की एकता और अखंडता के महान शिल्पकार भी थे। उनका योगदान अनमोल और अविस्मरणीय है। सरदार पटेल का जन्म 31 अक्तूबर, 1875 को गुजरात के खेड़ा जिले के नडियाद गांव में हुआ था।

उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा स्वाध्याय से प्राप्त की और फिर लंदन जाकर बैरिस्टर की पढ़ाई की। स्वदेश लौटकर अहमदाबाद में वकालत शुरू की।

1918 में खेड़ा संघर्ष के दौरान किसानों के पक्ष में पहली बार बड़े पैमाने पर संघर्ष किया।

1928 में बारडोली सत्याग्रह में लगान वृद्धि का विरोध किया और सरकार को मजबूर कर दिया कि वह लगान में राहत दे। इस सफलता के बाद उन्हें 'सरदार' की उपाधि प्राप्त हुई।

देश विभाजन के बाद, सरदार पटेल को उपप्रधानमंत्री और गृह मंत्री का पद सौंपा गया। उनकी सबसे बड़ी चुनौती थी, देश की 562 रियासतों को एकजुट करना।

इस कठिन कार्य को उन्होंने अपनी अद्भुत कूटनीति और दृढ़ इच्छाशक्ति से बिना किसी रक्तपात के पूरा किया। जूनागढ़ और हैदराबाद की रियासतों का भारतीय संघ में विलय उनकी उत्कृष्ट नेतृत्व क्षमता का उदाहरण है।

सरदार पटेल ने भारतीय नागरिक सेवाओं (आई.सी.एस.) का भारतीयकरण किया और इसे भारतीय प्रशासनिक सेवाएं (आई.ए.एस.) में बदल दिया। उनका मानना था कि एक मजबूत प्रशासन राष्ट्र की सुरक्षा और स्थिरता की नींव है।

13 नवम्बर, 1947 को उन्होंने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया, जिसे तब की सरकार के विरोध के बावजूद पूरा किया। उनकी दृष्टि में भारत की एकता और अखंडता का संरक्षण सर्वोपरि था।

बीमारी के बावजूद उन्होंने कार्य करना जारी रखा। अंतत: 15 दिसम्बर, 1950 को बॉम्बे के बिरला हाऊस में उनका निधन हो गया।

5 अगस्त, 2019 को जम्मू-कश्मीर के विशेष राज्य के दर्जे को समाप्त किया गया और कश्मीर भारत का अभिन्न अंग बन गया। सरदार पटेल के सपने को साकार करने का यह ऐतिहासिक कदम था।

भारत सरकार ने उनके सम्मान में 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' नामक विशाल प्रतिमा का निर्माण किया, जो दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा है।

इसके अलावा, 31 अक्तूबर को 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मनाया जाता है। 1991 में उन्हें मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

सरदार पटेल का कहना था, 'यदि देश की एकता को बनाए रखना है, तो हमें अपने मतभेदों को भुलाकर एकजुट होना होगा।' उनके द्वारा किया गया कार्य और उनके सिद्धांत आज भी हम सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।

– सुरेश कुमार गोयल

देव चेतना पत्रिका के प्रेरणा स्रोत एवं प्रधान संरक्षकगण

श्री चन्द्रशेखर बसवा, प्रधान संरक्षक | श्री अमरसिंह कसाना, प्रधान संरक्षक | श्री गोपाल धाभाई, प्रधान संरक्षक | श्री लक्ष्मणसिंह कसाना, जयपुर- प्रधान संरक्षक | श्री ब्रह्मसिंह गुर्जर, प्रधान संरक्षक | श्री शान्तिलाल गुर्जर, प्रधान संरक्षक | श्री बुद्धाराम चाड़, प्रधान संरक्षक | श्री देवनारायण लटाला, प्रधान संरक्षक | श्री पी.सी. अवाना, प्रधान संरक्षक | महन्त श्री दयालनाथजी, प्रधान संरक्षक

दामोदर गुर्जर, प्रधान संरक्षक | श्री राजेश लोमोड़ एडवोकेट, प्रधान संरक्षक | श्री विजय सिंह डोई, प्रधान संरक्षक | डॉ. रेखासिंह गुर्जर, प्रधान संरक्षक | श्री विजयसिंह कसाना, प्रधान संरक्षक | श्री जगदीश रावत, प्रधान संरक्षक | श्री चन्द्रभान अवाना, प्रधान संरक्षक | श्री लखन पटेल, प्रधान संरक्षक | मन्नालाल प्रधान, कोटा, प्रधान संरक्षक | श्री बाबूलाल छेपट, प्रधान संरक्षक

श्री सुखराम गुर्जर, प्रधान संरक्षक | श्री जगदीश गुर्जर, प्रधान संरक्षक | डॉ. अमित सिंह, प्रधान संरक्षक | श्री जगदीश भड़क, प्रधान संरक्षक | इन्द्र चन्द गुर्जर, प्रधान संरक्षक | श्री मनमोहन फागणा, प्रधान संरक्षक | श्री कन्हैयालाल छावड़ी, प्रधान संरक्षक | श्री नीरज पटेल, प्रधान संरक्षक | श्री गोविन्द गुर्जर, प्रधान संरक्षक | श्री सांवरलाल गुर्जर, प्रधान संरक्षक

श्री चेतन गुर्जर, प्रधान संरक्षक | श्री गौरीशंकर डोई, प्रधान संरक्षक | चौ. शिवपाल सिंह, प्रधान संरक्षक | विजयलाल सराधना, प्रधान संरक्षक | श्री राजेन्द्र दौराता, जयपुर- प्रधान संरक्षक | श्री अमरसिंह भगत, मिलकपुर-प्रधान संरक्षक | सत्यनारायण सेठ, दाबादेह, कोटा, प्रधान संरक्षक | श्री शंकरलाल कसाना, प्रधान संरक्षक | मेवाराम छावड़ी, प्रधान संरक्षक | फूलचन्द चेलरवाल, भैरुखेजड़ा, जयपुर, प्रधान संरक्षक | बजरंग लाल गुर्जर, जिलाध्यक्ष-झालावाड़, प्रधान संरक्षक

श्री जगजीतसिंह-स्व.श्रीमती चांद सिराधना, प्रधान संरक्षक | श्री भंवरलाल गुर्जर, प्रधान संरक्षक | श्री सूरतराम गुर्जर, प्रधान संरक्षक | श्रीमती सावित्री गुर्जर, प्रधान संरक्षक | श्री फतेहसिंह चेची, प्रधान संरक्षक | श्री धनराज गुर्जर, चेयरमैन, प्रधान संरक्षक | हलवाई श्री घीसू गुर्जर, प्रधान संरक्षक | श्री डी.एस. लोहमोड़, प्रधान संरक्षक | एडवोकेट बंशीधर गुर्जर, प्रधान संरक्षक | श्री सुरेश गुर्जर, कोटा, प्रधान संरक्षक

श्रीमती मंजू धाभाई, प्रधान संरक्षक | डॉ. बबीता सिंह, प्रधान संरक्षक | श्री ओमप्रकाश गुर्जर, प्रधान संरक्षक | श्री रघुनाथ गुर्जर (केमरी), प्रधान संरक्षक | श्री रामस्वरूप सराधना, प्रधान संरक्षक | श्री शांतिलाल (जिंदल), प्रधान संरक्षक | श्री गौरव गुर्जर, मुख्य संरक्षक | श्री ऋषिकेश गुर्जर, मुख्य संरक्षक | श्री गोवर्धन लाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक | श्री भँवरलाल चौपड़ा, मुख्य संरक्षक

श्री दयाराम गुर्जर, मुख्य संरक्षक | श्री रामकरण कसाना, मुख्य संरक्षक | श्री मदनलाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक | श्री बुधराम गुर्जर, मुख्य संरक्षक | श्री सुमेर सिंह मणकस, मुख्य संरक्षक | श्री किशनलाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक | श्री रामकिशन गुर्जर, मुख्य संरक्षक | श्री महावीर खटाणा, मुख्य संरक्षक | श्री अर्जुनलाल बोकण, मुख्य संरक्षक | महावीर गुर्जर, मुख्य संरक्षक

श्री पी.डी. गुर्जर, मुख्य संरक्षक | श्री खेमसिंह बैंसला, मुख्य संरक्षक | श्री श्योजीराम बागड़ी (मोखमपुरा वाले), मुख्य संरक्षक | श्रीमती बन्नी देवी, मुख्य संरक्षक | श्री मांगीलाल गुर्जर (दुगार), मुख्य संरक्षक | श्री मनोहरलाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक | श्री गिरधारीलाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक

देव चेतना पत्रिका के मुख्य संरक्षकगण

श्री आर.के. अग्रवाल, मुख्य संरक्षक
श्री बालाराम पोसवाल, मुख्य संरक्षक
प्रधान एम.सी. छोकर, गुर्जर समाज कल्याण परिषद, पंचकूला
श्री हरिनारायण बारवाल, जयपुर, मुख्य संरक्षक
वृद्धिचन्द गुर्जर, उपाध्यक्ष, राज. गुर्जर महासभा
श्री रवि लोमोड़, मुख्य संरक्षक
श्री बाछूराम डोई, जयपुर, मुख्य संरक्षक
श्री पदमसिंह कसाना, मुख्य संरक्षक
श्री भँवरसिंह धाभाई, बीबासर-झुंझुनूं, मुख्य संरक्षक
देशराज गुर्जर, पारी, चित्तौड़, मुख्य संरक्षक
श्री देवनारायण धाभाई, मुख्य संरक्षक

गिर्राज पोसवाल, मुख्य संरक्षक
डॉ. रामकुमार सिराधना, मुख्य संरक्षक
श्री राम मणगस, मुख्य संरक्षक
श्री जीवनराम मावरी, मुख्य संरक्षक
श्री छीतरलाल कसाना, मुख्य संरक्षक
श्री मुकेश सिन्धु, मुख्य संरक्षक
श्री संदीप नरसल, मुख्य संरक्षक
जगदीश लोहिया, दिल्ली, मुख्य संरक्षक
श्री रामपाल फागणा, मुख्य संरक्षक
श्री चेतन डोई, मुख्य संरक्षक
श्री श्रवणलाल चाड़, मुख्य संरक्षक

श्री शंकरसिंह बजाड़, मुख्य संरक्षक
मनीष भरगड़, मुख्य संरक्षक
श्री रामफूल डोई, मुख्य संरक्षक
श्री शैतान सिंह अवाना, मुख्य संरक्षक
श्री अखिल अवाना, मुख्य संरक्षक
श्री महेन्द्र सिराधना, मुख्य संरक्षक
श्री नीमसिंह गुर्जर, मुख्य संरक्षक
श्री देशराज चौहान, मुख्य संरक्षक
श्री दुष्यन्त सिंह तोमर, मुख्य संरक्षक
श्री रामधन चेची, मुख्य संरक्षक
श्री विनोद उमरवाल, मुख्य संरक्षक

श्री संजय सिंह गुर्जर, मुख्य संरक्षक
श्री दिनेश कसाना, मुख्य संरक्षक
श्री ओमप्रकाश जांगल, मुख्य संरक्षक
राजू अमावता, मुख्य संरक्षक
श्री मुकेश सुकल, मुख्य संरक्षक
श्री महेन्द्र सिंह चेची, मुख्य संरक्षक
श्री मंगल सिंह गुर्जर, मुख्य संरक्षक
श्री नन्दलाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक
श्री श्रवण लाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक
श्री नवरतन बारवाल, मुख्य संरक्षक
श्री राजेन्द्र फागणा, मुख्य संरक्षक

श्री प्रेमसिंह अवाना, मुख्य संरक्षक
श्री बीरबल प्रसाद, मुख्य संरक्षक
श्री ओमप्रकाश भड़ाना, मुख्य संरक्षक
श्री मंगलाराम खटाणा, मुख्य संरक्षक
श्री पुरुषोत्तम कसाना, मुख्य संरक्षक
श्री सीताराम कसाना, मुख्य संरक्षक
श्री राधेश्याम छावड़ी, मुख्य संरक्षक, न.पा.चेयरमेन-मण्डावा
श्री फूलचन्द बैंसला, मुख्य संरक्षक
डॉ. बी.एल. गोचर, मुख्य संरक्षक
श्री रामपाल सिंह लोमोड़, मुख्य संरक्षक
श्री राजेन्द्र सिंह दांता, मुख्य संरक्षक

एडवोकेट शैलेन्द्र धाभाई, मुख्य संरक्षक
श्री मोतीलाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक
श्री शंकरलाल छावड़ी, मुख्य संरक्षक
श्री हनुमान गुर्जर गरणिया, मुख्य संरक्षक
श्री महेश धाभाई, मुख्य संरक्षक
श्री रामगोपाल गुर्जर नेकाड़ी, मुख्य संरक्षक
श्री लालचन्द आरोलिया, मुख्य संरक्षक
श्री रघुनाथ गुर्जर, मुख्य संरक्षक
श्री एच.आर. कपासिया, फरीदाबाद, मुख्य संरक्षक
श्री रामधन डोई, जयपुर, मुख्य संरक्षक
श्री प्रमोद तँवर, जयपुर, मुख्य संरक्षक

श्री रामप्रकाश धाभाई, मुख्य संरक्षक
श्री कैलाश गुर्जर, मुख्य संरक्षक
श्री विनोद कसाणा, मुख्य संरक्षक
महन्त मंगलनाथ जी, मुख्य संरक्षक
मोहनलाल सराधना, भीलवाड़ा, मुख्य संरक्षक
प्रकाश चन्द पोसवाल, सीकर, मुख्य संरक्षक
हरिराम डोई, मुख्य संरक्षक
श्री राजेन्द्र बसवा, मुख्य संरक्षक
श्री दुर्गाशंकर बारवाल, मुख्य संरक्षक
श्री त्रिभुवन सिंह पंवार, मुख्य संरक्षक
श्री उगमा राम गुर्जर, मुख्य संरक्षक

श्री नानगराम कसाना, मुख्य संरक्षक
श्री शंकर लाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक
श्री देवेन्द्र सिंह गुर्जर, मुख्य संरक्षक
श्री देवी लाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक
श्री इन्द्रमल गुर्जर, मुख्य संरक्षक
श्री शंकर लाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक
श्री गोपाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक
श्री हरीश चन्द्र भाटी, मुख्य संरक्षक
श्री मोहनलाल गुर्जर, रायड़ा, मुख्य संरक्षक
श्री लक्ष्मण गुर्जर, मुख्य संरक्षक
श्री ललित गुर्जर चौहान, भीलवाड़ा, मुख्य संरक्षक

नांद गांव पुष्कर, अजमेर निवासी लक्ष्मण मुण्डन के सुपुत्र

नरेन्द्र गुर्जर द्वारा संचालित

नमो तन्दूरी चाय

Cafe & Kitchen

के शुभारम्भ पर

सभी इष्ट मित्रों, राजस्थान गुर्जर महासभा सदस्यों
गुर्जर समाज एवं प्रदेशवासियों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन

नमोः तन्दूरी चाय

निम्स हॉस्पिटल के पास,
एन.एच.8, जयपुर-दिल्ली हाईवे

"A New aroma fills the air ! Be part of our beginning as we open the doors of Namo Tandoori Chai."

DEV CHETNA Pub. Date : 5 November, 2025 Postal Reg. No. IR/ JaipurCity/ 426/ 2025-27
RNI No. RAJHIN/2013/50503 Posted Date : 11th November, 2025

भारत रत्न लौहपुरुष सरदार पटेल जयन्ती
राष्ट्रीय एकता दिवस
एवं
कार्तिक पूर्णिमा देव दीवाली पर्व पर
समस्त गुर्जर समाज एवं
सभी देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

महावीर गुर्जर
जिलाध्यक्ष
राजस्थान गुर्जर महासभा
नागौर

दाता श्री भोलाराम जी महाराज की अनुकम्पा से संचालित

Parth Finance Service
Nagour

New Shree Dev Transport Company
Jaitaran

New Sanwariya Marble Mines
Makrana

शुभेच्छु :
कैलाश मुंडण, महावीर मुंडण, नवीन मुंडण, पार्थ मुंडण, गर्वित मुंडण

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक **मोहन लाल वर्मा** के लिये स्काईटैक प्रिन्टर्स, 10, बोराज ठाकुर का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर (राज.) से मुद्रित एवं म.नं. 3714, कालों का मोहल्ला, कुन्दीगर भैरूं का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक : **मोहन लाल वर्मा**
मो. 9782655549 E-mail: devchetnanews@gmail.com